



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सुफुल



वर्षिक हिंदी पत्रिका
35वां अंक (2024)

प्रधाननिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
दक्षिण पूर्व रेलवे, गार्डनरिच कोलकाता- 700043

अनुक्रमणिका

- मुख्य संरक्षक का सन्देश
- प्रकाशन परामर्शदाता का सन्देश
- सह परामर्शदाताओं का सन्देश

क्रम संख्या	विषय वस्तु	रचना के प्रकार	रचनाकार
1.	अनोखा सफ़र	कहानी	श्री रतन कुमार बाला
2	जन्मदिन का उपहार	कहानी	श्री तपन मजुमदार
3	योग:स्वयं और समाज को एकजुट करना	लेख	श्री अदृष नंदी
4	काश	कहानी	श्रीमती गायत्री दे
5	अन्धविश्वास	कहानी	श्रीमती विभा सरकार
6	वह डायरी	कहानी	सुश्री श्रीजिता भादुरी
7	चित्रकारी	चित्रकारी	सुश्री अरिस्मिता दास
8	नियम तोड़ने का नतीजा	कहानी	सुश्री अन्वेषा जाना
9	चित्रकारी	चित्रकारी	सुश्री अरिस्मिता दास
10	अनमोल जीवन	कविता	श्री काशीनाथ
11	देवता का जन्म	लेख	श्री राहुल बन्द्योपध्याय
12	चित्रकारी	चित्रकारी	सुश्री अरिस्मिता दास
13	संतुष्टि में सुख	कहानी	सुश्री प्रियंका शर्मा
14	जय सर की फटकार	कविता	श्री संवृत चट्टोपाध्याय
15	नमक का महत्व	लेख	श्री श्रेयश भादुरी
16	चित्रकारी	चित्रकारी	श्री शाश्वत कर
17	अपनी तुलना दूसरो से न करें	कहानी	श्री अमरेश कुमार

[मुकुल पत्रिका-2024]

18	चित्रकारी	चित्रकारी	श्री शाश्वत कर
19	वक्त कहाँ	कविता	श्रीमती संयुक्ता भादुरी
20	जीवन संघर्ष	कविता	श्री अभिनव सक्सेना
21	चित्रकारी	चित्रकारी	श्री सौभिक भट्टाचार्य
22	माँ की ममता	लेख	श्रीमती सोमा चक्रवर्ती भादुड़ी
23	किताब	कविता	श्री रूपक भादुड़ी
24	चलो कुछ यार्दे बनाए	कविता	मो. फरशाद राशिद
25	चित्रकारी	चित्रकारी	श्री शाश्वत कर
26	जल और जीवन	कविता	सुश्री अरिस्मिता दास
27	बदल रहे हैं गाँव हमारे	लेख	मो. फरशाद राशिद
28	जीवन-सार	कविता	श्री संजीव कुमार
29	मुक संगीतकार	कहानी	श्री शशिकांत पांडे
30	शहीदों के नाम	कविता	श्री अभिनव सक्सेना
31	कार्यालयीन शब्दावली		

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक : सुश्री निर्मलामती मैस्नाम, प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा

परामर्शदाता : श्री रूपक साहा, निदेशक

सम्पादक मंडल : सुश्री संयुक्ता भादुरी, हिंदी अधिकारी

मो. फ़रूख राशिद, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री रतन कुमार बाला, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री संजीव कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

तकनीकी सहायक : श्रीमती सोमा चक्रवर्ती भादुड़ी, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्री महेश कुमार यादव, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

सुश्री प्रियंका शर्मा, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्री सौमेंद्र नाथ कर, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

स्वत्वाधिकार : प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा

अंक : 35

प्रकाशक : प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

नोट: लेखकों के विचार एवं लेख का उत्तरदायित्व उनका अपना है, सम्पादक मंडल का नहीं ।



सन्देश

“मुकुल पत्रिका” के 35 वें अंक के विमोचन हेतु मेरी ओर से हार्दिक बधाई । मेरे लिए यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हिंदी पखवाड़े के दौरान इस कार्यालय के गृह पत्रिका ‘मुकुल’ का विमोचन किया जा रहा है । यह पत्रिका निःसंदेह ही राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने वाले प्रयासों में कारगर सिद्ध होने वाला एक प्रयास है । कार्मिकों की सृजनात्मकता एवं रचनात्मकता को उजागर करने का यह एक सफल प्रयास है । इस तरह की संकलित ज्ञानप्रद आलेखों के माध्यम से निश्चित रूप से हिंदी के प्रचार प्रसार में बढ़ावा मिलेगा ।

मैं पत्रिका के सम्पूर्ण संपादक मंडल को इस आशा के साथ बधाई देती हूँ कि वे भविष्य में भी राजभाषा हिंदी को आगे वांछित लक्ष्य को प्राप्त करने में अपना अमूल्य योगदान देंगे ।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित ।

नि. माइस्नाम

निर्मलामती मैस्नाम,

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा



सन्देश

इस कार्यालय के समस्त कर्मिकों को हिंदी पखवाड़े की हार्दिक शुभकामनाएं। प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी इस शुभ कार्यक्रम के दौरान गृह पत्रिका "मुकुल" के एक नए अंक का विमोचन किया जा रहा है जिससे मुझे अपार हर्ष एवं आनंद की अनुभूति हो रही है। इस पत्रिका के सभी प्रतिभागियों को मेरी ओर से हार्दिक बधाई। इस दौरान कार्यालय में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। मुझे खुशी है की सभी ने इसमें बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया है। मेरा सदैव से ही यह प्रयास रहा है की सिर्फ हिंदी पखवाड़े पर ही नहीं बल्कि पूरे वर्ष यह कार्यालय अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने का प्रयास करें।

मैं इस आशा के साथ यह पत्रिका समर्पित करता हूँ कि सम्पूर्ण वर्ष आप सभी अपने प्रत्येक कार्यालयीन कामकाज निष्ठा के साथ हिंदी भाषा में करने में प्रयासरत रहें।

शुभकामनाओं सहित।

रूपक साहा

निदेशक



सन्देश

पिछले वर्षों की भाँति इस वर्ष भी कार्यालय की गृह पत्रिका “मुकुल” के 35 वे अंक का प्रकाशन हो रहा है, यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी की उत्तरोत्तर प्रगति का एक सूचक है ।

पत्रिका के इस 35 वें अंक में सम्मिलित सभी रचनाओं का संकलन और सम्पादन करने में हिन्दी अनुभाग का जो महत्वपूर्ण योगदान है , वह सराहनीय है। इस पत्रिका के माध्यम से रचनाकारों को एक ऐसा मंच प्राप्त हुआ है जिससे उन्हें अपने लेखनी के द्वारा अपने भावों को व्यक्त करने का सुअवसर मिला है पाठकों से यही अपेक्षा रहेगी कि वे पत्रिका के साहित्य का आनंद लेंगे और पत्रिका के प्रति अपने विचारों से हमें अवगत कराएंगे ।

धन्यवाद !

रतन कुमार बाला

रतन कुमार बाला,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)



सन्देश

मुकुल पत्रिका के 35 वें अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार आनंद की अनुभूति हो रही है। मैं इस पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं चित्रकारों के प्रति आभारी हूँ जिन्होंने अपने रचनाओं के द्वारा इस पत्रिका को सुसज्जित किया है। मैं आशा करती हूँ कि हमारे समस्त रचनाकार अपने लेखनी के द्वारा नए आयामों को प्राप्त करें।

यह पत्रिका न केवल राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की सहायक है बल्कि रचनाकारों के अपने-अपने प्रतिभा को दर्शाने का एक सफल मंच भी है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए हमें यह संकल्प लेना होगा कि कार्यालयीन कामकाज हिंदी में करना हम अपना गौरव समझें और केवल लक्ष्य प्राप्ति के उद्देश्य से नहीं बल्कि राजभाषा को गौरान्वित करने के लिए भी हम अपना योगदान देते रहें।

आशा करती हूँ कि यह अंक समस्त पाठकों को आनन्द देगी और आपके बहुमूल्य सुझाव हमारे मार्गदर्शन में सहायक होंगे। सभी रचनाकारों, पाठकों एवं पत्रिका परिवार को सादर धन्यवाद।

संयुक्ता भादुरी

संयुक्ता भादुरी
हिंदी अधिकारी



अनोखा सफर

सावन का महीना था। कई दिनों से तेज़ बारिश हो रही थी। बारिश में नहाकर सभी पेड़ मानो निर्मल और सजीव हो गए थे। माधवी अपलक इस मनोरम प्रकृति को निहार रही थी। वह हमेशा से ही सुबह-सुबह उठ जाती है। बचपन में भोर होते ही बाबा उसे जगा दिया करते थे। “मुन्नी...उठो बेटा, सभी पंछी जग गए हैं और मेरी चिड़िया रानी अब तक सो रही है।”

आज भी जैसे बाबा की वह दुलार भरी आवाज उसे जगा देती है। उनकी वह ध्वनि मानो समग्र प्रकृति में मिलकर एकाकार हो गई है। बाबा को गुजरे वर्षों बीत गए परंतु फिर भी माधवी उन्हें हमेशा अपने साथ पाती है। इस घर के हर एक फूल में, पेड़ के पत्तों में, यहाँ की बारिश की बूंदों में माधवी को बाबा के अस्तित्व का एहसास होता है।

आज मुन्नु (बेटा) आएगा और उसे अपने साथ दिल्ली ले जाएगा। माधवी ने इस घर में अपना 65 साल बिताया है। केवल बीच के पाँच वर्ष जो उसने अपने पति अनिमेष के संग बिताया। फिर एक दुर्घटना ने उसके जीवन का रुख ही बदल दिया। माधवी को अपने दो बच्चों के साथ फिर एकबार हांसीमारा के इस घर में अपने बाबा के पास आना पड़ा। तब से वह यहीं बस गई।

बेटा अनिरुद्ध (मुन्नु) दिल्ली के एक बड़े कंपनी में काम करता है। उसकी पत्नी भी वहाँ के एक अंग्रेजी माध्यम स्कूल में शिक्षिका हैं और नाती उसी स्कूल के पाँचवी कक्षा में पढ़ती हैं। उनके लिए समय निकालकर हांसीमारा आना संभव नहीं हो पाता है। दो एक दिन में वीडियो कॉल द्वारा खबर ले लेते हैं। बेटी सुलोचना (मिनी) कोलकाता के केन्द्रीय विद्यालय में शिक्षिका है और उसके पति फूड कॉर्पोरेशन में अधिकारी पद पर है। वही बीच-बीच में आ जाया करती है।

माधवी के बाबा का यह “सपनों का नीड़” माधवी के लिए जैसे जीवन का एक अभिन्न अंग है। इस घर का हर एक कोना जैसे उसे अपनत्व के डोर से बांधे रखा है। बाबा हमेशा कहा करते थे कि, जब जीवन में सब साथ छोड़ देते हैं तो ये पेड़-पौधे, यह प्रकृति निस्वार्थ

भाव से साथ निभाते हैं। जब भी तुझे अकेलेपन का एहसास होगा देखना यही तेरे साथ होंगे। आज माधवी हृदय से इस बात को महसूस कर रही थी। उसकी आंखें नम थीं। पिछले महीने गर्मियों की छुट्टी के दौरान मिनी अपने माँ से मिलने आई थी और वह माधवी जी के बिगड़ते सेहत को लेकर परेशान हो गई। भाई और बहन के बीच काफी चर्चा हुई। भाई बहन ने मिलकर घर बेचने की योजना भी बना डाली। नतीजा यह हुआ की आज बेटा उसे अपने साथ ले जाने के लिए आ रहा है। माधवी जी का मन आज बार-बार अतीत के बीते दिनों में खो रहा था।

बोझिल मन से, अतीत को अपने में समेटे माधवी देवी ने हांसीमारा छोड़ा। नोएडा के सात मंजिले अपार्टमेंट के उपरितल के खिड़की से माधवी को आसमान के अलावा कुछ ठीक से नजर नहीं आता था। चारों तरफ सिर्फ बड़ी-बड़ी मंजिले और कुछ नहीं। माधवी को लगता जैसे वह प्रकृति से बहुत दूर आ गई है। मिट्टी से उसका रिश्ता जैसे खत्म सा होता जा रहा है। दिन रात का फर्क पता नहीं चलता है। दिन में दो बार बेटे बहु या पोते से मुलाकात होती है। सभी अपने-अपने काम में व्यस्त हैं। उसे लगता है उसने अपना सपनों का नीड़ क्या छोड़ा प्रकृति ने भी उससे मुंह मोड़ लिया।

आजकाल उसे नींद भी नहीं आती है। कभी कभार यूँ ही खिड़की की ओर देखते- देखते आंखें बंद हो आती हैं। वैसे ही आज ऊँचाई में उन्हें एक अजीबोगरीब सपना आया।

भारी बारिश हो रही थी। चारों ओर पानी ही पानी भरा था। एक छोटे से नाव में सभी सवार थे। बाबा, माँ, किशोरी माधवी, राधा बुआ और कई लोग सभी एक अनिर्दिष्ट यात्रा पर निकले थे। अचानक एक तेज हवा का झोंका आया और माधवी नाव से गिर पड़ी। बाबा ने हाथ बढ़ाया पर माधवी दूर होती चली गई। दूर .. बहुत दूर।

माँ.. दादी .. मम्मी जी..... बेटे, पोते और बहु की संयुक्त ध्वनि कानों में गूंज रही थी। माधवी जैसे उनसे बहुत दूर हो गई थी। वह अपने पूरे शक्ति के साथ उठने का प्रयास कर रही थी पर सबसे दूर होती जा रही थी। बचपन में डूबकर तैरते वक्त जैसे बाबा की आवाज अस्पष्ट सुनाई पड़ती थी उसी प्रकार आत्मज की पुकार दूर से दूर होती गई और फिर अपरिसीम शांति।

"मौत का एहसास होता है, जब हमें जीवित रहने की आवश्यकता नहीं होती।" -रवींद्रनाथ टैगोर

रतन कुमार बाला,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)



जन्मदिन का उपहार

सुदीती को अपने जन्मदिन का बेसब्री से इंतजार रहता है। हरवर्ष जन्मदिन के लगभग एक महीने पहले से ही वह दिन गिनना आरंभ कर देती है। उसका यह स्वभाव बचपन से ही है। इस वर्ष वह 18 वर्ष की हो जाएगी इसलिए सुदीती और ज्यादा खुश है, उसे लग रहा है कि बस और एक दिन फिर मैं बड़ी हो जाऊँगी। कोई मुझे किसी बात के लिए टोकेगा नहीं, मैं अपने दोस्तों के साथ यहाँ- वहाँ जा पाऊँगी, अब तक की भांति कोई मुझे रोकेगा नहीं। यहीं सब सोचते हुए पता नहीं कब सुदीती की आंखें लग गईं। अगली सुबह “ हैप्पी बर्थडे टू यू “ के धुन पर उसकी नींद टूटी। उसने हँसकर आँखें खोली। सामने मम्मी-पापा, दादा-दादी, चाचा-चाची के साथ-साथ सभी भाई-बहनों को भी खड़े पाया। पूरे परिवार से मिलित बधाई पाकर सुदीती का मानों दिन ही बन गया था। जल्दी-जल्दी नहा धोकर वह पूजाघर में गई, वहाँ सभी उसका इंतजार कर रहे थे। भगवान का आशीर्वाद लेकर उसने एक-एककर सभी बड़ों के पैर छूए। आज उसे पहली बार पापा ने दोस्तों के साथ अकेले जाकर जन्मदिन मनाने की अनुमति दी थी। शाम को परिवार के साथ समय बिताने का वायदा कर वह नाश्ता कर अपने कुछ खास मित्रों के साथ घूमने की मंशा लिए घर से निकल पड़ी। आज पापा जी ने तो उसे काफी रुपए दिए ही थे और घर के सभी बड़ों से भी आशीर्वाद स्वरूप काफी रुपए मिले थे। आज सुदीती जैसे सपनों की दुनिया में थी। उसके पास लगभग 6,000/- रुपए थे जो वह अपने साथ लेकर निकली थी। अपने दोस्तों को वह पास के बस स्टैंड में आने के लिए कह रखा थी। छः मित्रों की टोली मिलकर एक मॉल में जाने का प्लान बना रहे थे। सभी बहुत खुश थे। खाने पीने के अलावा वे एक फिल्म देखने की भी योजना बना रहे थे। तभी सामने रास्ते में उन्होंने एक बच्ची को दहाड़े मारकर रोते देखा और उसके सामने एक बूढ़ी औरत बेसुध पड़ी थी। वेशभूषे से वे गरीब लग रहे थे। सुदीती की टोली तुरंत वहाँ पहुंची। बच्ची उन्हें देखकर जब कुछ शांत हुई तो उससे पता चला कि वह बूढ़ी औरत उसकी दादी है। कई दिनों से खाने की तंगी के कारण दादी भूखी हैं। कुछ भी थोड़ा बहुत मिलता है तो वह अक्सर अपने पोती को खिला देती थी और खुद भूखी रह जाती थी। बच्ची का इस बूढ़ी दादी के अलावा दुनिया में कोई नहीं है। तब सुदीती

सह सभी दोस्तों ने अपनी योजना भूलकर बच्ची व उसकी दादी को सहायता करने का मन बनाया। अपने दोस्तों के साथ मिलकर सुदीती ने दादीजी को एक ऑटो पर बिठाया और पास के एक डॉक्टर के चैम्बर में ले गए। इन्जेक्शन, सलाईन चढ़ाने के बाद उन्हें होश आया। डॉक्टर ने उन्हें कुछ समय के लिए अपने चैम्बर में ठहरने के लिए कहा तो मित्रों की टोली उन्हें नर्स की देखरेख में छोड़ उस बच्ची को भरपेट खाना खिलाने ले गए। पास की एक दुकान से बच्ची के लिए फ्रॉक और दादी के लिए एक साड़ी खरीदा। फिर डॉक्टर का देय मिटाया और सभी मिलकर उन्हें उनके घर छोड़ने के लिए गए साथ में चावल, दाल, सब्जी आदि भी ले ली। लौटते हुए सुदीती ने कुछ रुपए दादीजी के हाथों में थमाया। बच्चों के इस व्यवहार से वह बूढ़ी भाव विभोर हो गई और आशीष देते नहीं थकी। दिनभर की भागा-दौड़ी में बच्चों को ना तो अपनी योजना याद रही, न तो खाना और ना ही फिल्म। शाम हो चली थी। सबको अपने-अपने घर भी जाना था। भूख भी लगी थी। सुदीती के पास अब कुछ ही रुपए बचे थे जिससे उसने अपने साथियों को एक-एक रोल और आईसक्रीम खिलाया और संतोष के साथ एक दूसरे से विदा हुए।

सुदीती घर लौटी तो सबने उससे पूछा - “कैसी रही तुम्हारी पार्टी ?”

उसने सारा वृत्तांत कह सुनाया।

घर में सभी सुदीती के लिए गर्व महसूस कर रहे थे।

सुदीती की माँ ने कहा, “मेरी बेटी वाकई बड़ी हो गई है।” यह कहकर उसे अपने गले से लगा लिया। पापा के आंखों में गर्व के आँसू थे।

सुदीती भी आज बहुत खुश थी क्योंकि आज सही मायने में सबके आशीष और प्यार के रूप में उसे जन्मदिन का श्रेष्ठ उपहार मिला था।

“यदि आप दुनिया को एक अच्छी चीज देते हैं, तो समय के साथ आपके कर्म अच्छे होंगे, और आपको अच्छा परिणाम मिलेगा।” - रसेल सीमन्स

तपन कुमार मजूमदार,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)



योग: स्वयं और समाज को एकजुट करना

योग भारत की प्राचीन परंपरा का एक अमूल्य निधि है। यह मन और शरीर की एकता; विचार और क्रिया; मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य; स्वास्थ्य और कल्याण के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। यह लेख केवल व्यायाम से संबंधित नहीं बल्कि स्वयं, दुनिया और प्रकृति के साथ एकता की भावना की खोज से संबंधित है। यह घोषणा 27 सितंबर, 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने संबोधन के दौरान भारतीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी की ओर से की गई थी, जिसके कारण संयुक्त राष्ट्र ने 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया। अगले वर्ष की अगली तिथि में नई दिल्ली के राजपथ पर पीएम मोदी और गणमान्य व्यक्तियों सहित 84 देशों के 35,985 लोगों का समावेश हुआ, जो अब तक का सबसे बड़ा योग वर्ग बन गया है।

योग आधुनिक प्रवृत्ति से बहुत दूर है; यह 3,000 से अधिक वर्षों की एक प्राचीन परंपरा है। "योग" शब्द संस्कृत मूल से लिया गया है जिसका अर्थ होता है "जोड़ना" या "एकजुट होना"। महर्षि पतंजलि, जिन्हें प्रायः योग का जनक माना जाता है, ने लगभग 2000 वर्ष पूर्व योग सूत्र लिखे थे, जिसमें 84 यौगिक मुद्राएं हैं। कुछ लोग भगवान शिव को आदियोगी (पहला योगी) भी मानते हैं जैसा कि प्राचीन हिंदू ग्रंथों में लिखा गया है। वर्षों से, योग ने धर्म को पार कर लिया है, और इसके अभ्यास को भारत में रहने के तरीके के रूप में अपनाया गया था।

योग के माध्यम से 'स्वयं और समाज के लिए योग' विषय पर इस वर्ष आयोजित 10वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस में प्रकाश डाला गया है।

केंद्रीय आयुष मंत्रालय द्वारा पीजीआईएमईआर, चंडीगढ़ के सहयोग से एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था, जिसे एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स द्वारा मान्यता दी गई थी, जिसमें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2024 पर आम योग प्रोटोकॉल करने वाले सबसे अधिक स्वास्थ्य पेशेवरों को शामिल किया गया था।

भारत में विभिन्न संगठनों के बीच, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने अपनी सभी इकाइयों और केंद्रों में "स्पेस के लिए योग" पहल की मेजबानी की। इसके अतिरिक्त, हिंद महासागर क्षेत्र और पश्चिमी प्रशांत महासागर में तैनात भारतीय नौसेना के युद्धपोतों ने समुद्र और विदेशी बंदरगाहों दोनों में योग सत्र आयोजित किए।

आज समग्र विश्व ,यह महसूस करते हैं कि योग ने दुनिया को एकजुट किया है और प्राचीन भारतीय परंपरा का यह अमूल्य उपहार मनुष्यों, प्रकृति और दुनिया के बीच सद्भाव को बढ़ावा देता है।

‘योग के प्रति जागरूकता चारों ओर फैलाएँ । योग हमें सुरक्षित और स्वस्थ रखेगा ।’

श्री अदृश नंदी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



सुश्री रीना साहा महानिदेशक महोदया हिन्दी पखवाड़ा-2023 समारोह में संबोधन करते हुए



हिन्दी पखवाड़ा-2023 समारोह में श्री रूपक साहा निदेशक संबोधन करते हुए



हिंदी पखवाड़ा -2023 के समारोह में समूह-गान (वंदना एवं स्वागत गीत) प्रस्तुत करते हुए कर्मचारी



हिंदी पखवाड़ा -2023 के समारोह में हिंदी अधिकारी श्रीमती संयुक्ता भादुड़ी द्वारा मुख्य अतिथि को स्मारक चिन्ह प्रदान करते हुए



हिन्दी पखवाड़ा-2023 के समारोह में कार्यालय की पत्रिका “मुकुल” का विमोचन करते हुए सुश्री रीना साहा महानिदेशक महोदया, श्री अनूप भदानी (लागत लेखा अधिकारी, भारतीय भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण) मुख्य अतिथि महोदय एवं श्री रूपक साहा निदेशक महोदय



हिन्दी पखवाड़ा-2023 समारोह में कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्री महेश यादव कनिष्ठ अनुवादक



हिंदी पखवाड़ा-2023 समारोह में कार्यक्रम का आनंद लेते हुए कर्मचारीगण



हिन्दी पखवाड़ा-2023 में आयोजित अनुवाद प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते हुए कार्यालय के कर्मचारीगण



सुश्री , प्रियंका शर्मा कनिष्ठ अनुवादक हिंदी पखवाड़ा-2023 समारोह में काव्य-पाठ करते हुए



श्री सौरोदीप,राय सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी पुरस्कार ग्रहण करते हुए



केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो कोलकाता द्वारा आयोजित 17 वें अनुवाद प्रशिक्षण में इस कार्यालय की कनिष्ठ अनुवादक सुश्री प्रियंका शर्मा द्वारा स्वर्ण-पदक प्राप्त करते हुए



काश

ऋत्तिक के मन में आज एक अलग ही प्रकार का उमंग है। सुबह से कई बार वह घड़ी देख चुका है। उसे शाम के पाँच बजने का इंतजार है। चार बजते ही वह अंदर तैयार होने चला जाता है। ड्राइंग हॉल में उसका बचपन का मित्र अंकुश बैठा हुआ किसी के आने का इंतजार कर रहा है। ऋत्तिक तैयार होकर जैसे ही बाहर आता है अंकुश ठहाका लगाकर हँस पड़ता है। “अरे यह तूने क्या पहन लिया।” आज तो सिर्फ लड़की तुझे देखने आ रही है। शादी तो पसंद नापसंद पर निर्भर है और तुझे देखकर लग रहा है जैसे अभी तू घोड़ी पर सवार होने जा रहा है। ऋत्तिक शरमाते हुए बोला- “अरे यार, यह मैंने अपनी बहन की शादी में पहनने के लिए बनवाया था। तब से यूँ ही पड़ा हुआ है इसलिए”

ऋत्तिक एक 25 वर्षीय नौजवान है। बांग्ला साहित्य में एम.ए किया है। उसे नौकरी चाकरी का कोई शौक नहीं है, उसे तो सिर्फ कविताएं लिखना, तरह-तरह के साहित्य पर शोध करना पसंद है लेकिन घरवालों के दबाव के कारण आजकल कभी-कभार नौकरी की तलाश कर लेता है। वही उसका बचपन का साथी अंकुश एक मल्टी नेशनल कंपनी में ऊँचे पद पर काम करता है। हाल ही में एक दिन ऋत्तिक और अंकुश साथ मिलकर नौकरी का विज्ञापन देख रहे थे कि अचानक एक खास विज्ञापन पर उनकी नज़र पड़ी। “USA स्थित नौकरी पेशा कन्या के लिए शिक्षित बेरोज़गार वर चाहिए। तुरंत संपर्क करें।” तो आप समझ ही रहे होंगे की आज का यह सजना सँवरना उसी विज्ञापन का नतीजा है। समाचार को पढ़ते ही अंकुश ने ऋत्तिक के लिए उस कन्या को फोन लगाया और आज वह लड़की लड़का देखने आ रही थी। लड़की 24 वर्षीय थी, USA में ही पली बड़ी थी और वहीं नौकरी भी करती थी। साल में कम से कम एकबार भारत जरूर आती थी। वह खुद को किसी से कमतर नहीं समझती थी। बचपन से ही उसने सोच रखा था कि वह किसी शिक्षित बेरोज़गार भारतीय लड़के से शादी करेगी और भारत के नियम से अलग वह लड़का देखने जाएगी न कि लड़का उसे देखने आएगा।

आज पियाली और उसकी ममेरी बहन रीता अपने मिशन पर निकल पड़े थे।

ऋत्तिक तो पहले इस रिश्ते को लेकर काफी ना नुकर कर रहा था पर अंकुश के काफी समझाने पर किसी तरह मान गया था।

अचानक बाहर कॉल बेल की आवाज़ सुन अंकुश ने दरवाजा खोला। जीन्स टॉप धारी दो आधुनिक महिलाओं का प्रवेश हुआ। परिचय पर्व के बाद पियाली बिना हिचकिचाहट सीधे टॉपिक पर आ गई कि जैसा की आप जानते हैं की मुझे बेरोज़गार वर चाहिए। क्या आप

राजी है? ऋत्तिक सर झुका कर बैठा रहा पर अंकुश ने उसकी ओर से हामी भरी और कहा “यह Complete बेरोज़गार है । इसे केवल साहित्य में रुचि है, नौकरी में नहीं” ।

पियाली खुश हो गई, उसने कहा “अमेरीका में मुझे रात-दिन काम करना पड़ता है ऐसे में मुझे एक ऐसा साथी चाहिए जो काम में मेरा हाथ बँटाएगा और मुझे हर कदम में साथ भी देगा”। “यानि आपको एक शिक्षित नौकर की तालाश है?” – ऋत्तिक ने कहा । “अरे नहीं, मुझे एक ऐसा हमसफ़र चाहिए जो मुझे और मेरे काम को समझे और मेरे सुख-दुख में मेरा साथ दे। जैसा कि हर एक भारतीय नारी करती है, पियाली ने जवाब दिया” । अचानक पियाली ने फिर पूछा- “आप खाना तो बना लेते हैं ना?” ऋत्तिक ने हाँ में सर हिलाया। अब ऋत्तिक ने कहा, “ दिनभर घर का काम करूंगा । क्या एक लड़का इस तरह पराधीन रह सकता है भला?” “अरेपराधीन कहाँ, आप तो स्वतंत्र हैं । थोड़ा बहुत काम, फिर दिन भर घूमना-फिरना अपने साहित्य चर्चा के शौक को पूरा करना, और बस मज़े ही मज़े । फॉर्मूला से बाहर निकल कर तो देखिए, जीने का मज़ा कुछ और ही है ।”

ऋत्तिक और अंकुश चुप थे । अचानक रीता ने कहा “ली तो अब चलें?” ऋत्तिक और अंकुश दोनों चौंक गए। तभी पियाली ने कहा “असल में समय बचाने का यह एक अंदाज है, हम एक दूसरे का नाम छोटा कर देते हैं।” जैसे पियाली से “ली” रीता से “री” जैसे आपको हम “वीक” कहेंगे और उन्हें “अंक”। अंकुश खिलखिलाया पर ऋत्तिक चुप रहा । दोनों ने विदा लिया और जाते-जाते बाद में सूचित करने के लिए कह गए।

जाते ही अंकुश ने ऋत्तिक से उसकी मर्जी पूछी तो ऋत्तिक ने कहा “मुझे किसी का ‘वीक’ नहीं बनना, मैं स्ट्रॉंग ही भला”। “अगर तुझे ‘अंक’ बनने का शौक है तो तू ही बन जा” । लगभग छः महीना बीत गया है। ऋत्तिक को “ली” का “वीक” बनना नहीं भाया । नसीब से उसे सुदूर पुरलिया के एक बेनाम गाँव के एक छोटे से प्राइमरी स्कूल में नौकरी लगी है । स्कूल के अलावा उसे लिखने-पढ़ने के लिए काफी व़क्त मिल जाता है । आज ही उसे अंकुश से शादी के निमंत्रण का पत्र मिला है । अगले हफ्ते शादी है और 15 दिन बाद वह न्यूयार्क जा रहा है। उसने नौकरी छोड़ दी है। अब तक तो आप समझ ही गए होंगे की अंकुश को “ली” का “अंक” होना भा गया । पुरलिया के गाँव के किराए के मकान के टिमटिमाते बल्ब के नीचे बैठकर कविता लिखते हुए ऋत्तिक के मन में एक टीस उठी, और उसने मन ही मन कहा, “काश”।

“समय और समझ खुशनसीब लोगों को एक साथ मिलते हैं क्योंकि जब तक इंसान को समझ आती है उसका कीमती समय निकल चुका होता है ।”

गायत्री दे,

(लेखापरीक्षक)



अंधविश्वास

अंधविश्वास, कुसंस्कार आदि सामाजिक कुरीतियाँ हैं, जो समाज को पीछे की ओर ले जाती हैं।

वैसे तो लगभग सभी इंसान में कोई न कोई अंधविश्वास अवश्य रहता है जो अक्सर किसी अनजाने डर से जन्म लेता है। किसी चीज की अभीप्सा किसी का डर या लालच इंसान को इन कुसंस्कारों की ओर धकेलता है।

मैं आज एक ऐसे ही घटना का वर्णन करने जा रही हूँ। बात कुछ समय पहले की है, मेरे घर के पास ही राजेन्द्र नाम का एक मूर्तिकार रहता था। मूर्ति बनाने की कला में वह निपुण था। पूरे इलाके में वह राजू मूर्तिकार के नाम से जाना जाता था। उसकी बनाई मूर्ति में मानो जादू था लेकिन उसकी कमजोरी थी, उसका अंधविश्वास। कभी आते-जाते उसकी मुलाकात एक तांत्रिक (मंगल) से हुई जिसने राजू मूर्तिकार की कमजोरी को भांप लिया और उसका फायदा उठाने लगा। आए दिन उसे तरह-तरह का मंत्र देता और उससे पैसा ऐंठता। राजू को विश्वास था कि उसकी सम्पूर्ण उन्नति का श्रेय मंगल तांत्रिक के मंत्रों का है। राजू मूर्तिकार मेहनत करता पर उसकी आधी कमाई मंगल हड़प लेता। राजू का परिवार राजू के इस स्वभाव से बहुत परेशान थे।

एक बार राजू को किसी काम के लिए पास के किसी शहर में जाना था तो वह अपने दुकान का दायित्व मंगल के हवाले छोड़ काम पर निकल गया। मौके की बात थी कि तभी कुछ कला के जानकार राजू मूर्तिकार की खोज में उसके दुकान में आए। उन्हें राजू का काम इतना पसंद आया कि उन्होंने वहाँ उपलब्ध लगभग सभी मूर्तियाँ अपने शोरूम के लिए खरीदना चाहा। मंगल ने कहा कि, “यह दुकान तो मेरा नहीं है आप अगले सप्ताह आकर राजू मूर्तिकार से बात कर लीजिएगा।” राजू जब लौटा तो उसने मंगल से पूछा “क्या कोई खरीददार आया था?” मंगल ने ना में सर हिला दिया।

मंगल रात भर उसे ठगने का उपाय सोचने लगा। अगली सुबह वह राजू के पास गया और बोला, “राजू, कल सपने में मुझे एक मंत्र मिला है जिसके प्रयोग से सात दिनों के अंदर तुम्हारे

पास बहुत पैसा आने लगेगा । राजू ने मंगल से मंत्र लिया और उसे काफी पैसा भी दिया । दो-तीन रोज बाद निर्धारित खरीददार मूर्तियाँ खरीदने आए लेकिन मंगल ने अपनी चालाकी से उनके पहले आने की बात राजू के सामने उजागर नहीं होने दिया । शहरी खरीददार ऊँची कीमत देकर सारी मूर्तिया ले गए और साथ ही और मूर्तियों का ऑर्डर भी देकर गए । राजू को तो इस बार मंगल पर और यकीन हो गया । राजू खुशी-खुशी घर आया और सारी बातें अपनी पत्नी निर्मला से बताया । वह मंगल के दैवीय शक्ति का तारीफ करते न थका । निर्मला को यह मंगल की कोई चाल लगी और वह राजू से छिपकर सच के खोज में निकल पड़ी ।

इधर राजू के आग्रह से अब मंगल उसी के घर रहने लगा था । एक दिन अचानक राजू की पत्नी ने मंगल को किसी से मूर्तियों को बेचने को लेकर बात करते सुना और उसे शक होने लगा । अगले ही दिन वह फिर से राजू से एक नया मंत्र देने की बात कहा अब निर्मला का शक यकीन में बदल गया। वह खरीददारों के आने के इंतजार में गली में जाकर खड़ी हो गई । कुछ समय बाद कुछ लोग राजू के खोज में वहाँ से गुजरे, निर्मला ने सारी बातें उन्हें बताई । वे निर्मला की सहायता करने के लिए तैयार हो गए । निर्मला उन्हें लेकर दुकान में आई । खरीददारों के साथ मिलकर निर्मला ने मंगल का सच राजू के सामने लाने की ठानी । अपने योजना के तहत निर्मला ने राजू को घर बुलाया । उधर इस योजना से अनजान मंगल खरीददारों से पैसा ऐंठने की मंशा से दुकान पहुँच गया। निर्मला ने राजू को मंगल की हकीकत बताई पर राजू मानने को राजी न था । उधर मंगल खरीददारों से जब अपना हिस्सा वसूल रहा था तभी निर्मला ने चुपके से राजू को मंगल के हकीकत से वाकिफ़ करवा दिया । राजू अचानक उनके सामने गया तो मंगल बौखला सा गया । खरीददारों ने भी राजू के सामने मंगल का सारा सच कह डाला कि कैसे वह राजू और खरीददार दोनों से पैसा ऐंठता था । राजू अपने अंधविश्वास पर शर्मिंदा हुआ और अपनी पत्नी से माफी मांगा । लेकिन इसके बाद से मंगल इलाके में और नहीं दीखा । वह ऐसे गायब हुआ जैसे गधे के सर से सींग । शायद अब वह फिर किसी नए राजू की तलाश में निकला होगा ।

“अंधविश्वास कमजोर दिमागवालों का घर है”- एडमंड बर्क

विभा सरकार

(वरिष्ठ लेखापरीक्षक)



वह डायरी

हमेशा की तरह इस बार भी गर्मियों की छुट्टियों में हम मामाजी के घर गए थे। वहाँ हमारे भाई-बहन तो हैं ही और साथ में बाकी मौसरे भाई बहन भी हमेशा आते हैं। हम सब एक साथ बहुत मस्ती करते हैं। पूरे गाँव के चक्कर लगाना, आम के खेत से आम तोड़ना, मामाजी के साथ झील से मछली पकड़ना इत्यादि हमारा रोज का काम रहता। मामाजी और नानीजी हमें अच्छे-अच्छे पकवान बनाकर खिलाती। ऐसे ही हर एक गर्मी की छुट्टियाँ जैसे पंख लगाकर खत्म हो जाती। अक्सर शाम को हम सब छत पर गद्दे बिछाकर बैठ जाते, नानी कभी कहानियाँ सुनाती तो कभी हमें आसमान के तारों से परिचित करवाती और रात को हम सब छत पर यूँ ही बातें करते-करते एक साथ सो जाते।

इस वर्ष भी कुछ अन्यथा न था, सिर्फ मामाजी गाँव में नहीं थे। वे हमारे जमीन के किसी काम के लिए शहर गए हुए थे और आज रात ही आने वाले थे। हम सभी उन्हीं का इंतजार कर रहे थे। रात को हम सब बातें कर ही रहे थे कि तभी मामाजी आ गए। हम सब खुशी से झूम उठे। उनके हाथ में एक काले कवर वाली डायरी थी। हमने उत्सुकतापूर्वक पूछा कि वो क्या है? तो उन्होंने कहा कि यह उन्हें उनके पिछले लाहौर के सफर में ट्रेन में पड़ा मिला था। असल में लाहौर में हमारी कुछ जमीन है इसलिए मामाजी हर साल वहाँ एक बार जरूर जाते हैं। फिर मामाजी हमारे पास आकर डायरी खोलकर बैठ गए।

उसमें लिखा था “पापाजी के नाम”- शांति। अब तक हमें पता चल गया था कि वह किसी शांति नाम की महिला की डायरी थी, जो सन 1942 की थी अर्थात् स्वतंत्रता से भी पाँच वर्ष पहले की। सबके मन में कौतूहल था कि इतनी पुरानी डायरी में पता नहीं क्या लिखा होगा। मैं सोच ही रही थी कि मामाजी ने पढ़ना शुरू किया।

“आज मेरी ज़िंदगी की एक नई शुरुआत है। हाँ, मुझे इस बात का दुख हमेशा रहेगा कि पापाजी आपने मुझे गलत समझा और मुझसे रिश्ता तोड़ डाला। मगर आपको यह जानकर गर्व भी होगा कि मैंने अपने हिंदुस्तान के लिए कुछ किया है। कुछ दिनों पहले मैं नरेंद्र से एक रैली में मिली। मैं वहाँ अपनी सहेली मंजीत के संग गई थी। नरेंद्र मंजीत का पांजी है। उनके मन में हिंदुस्तान को उन फिरंगियों से स्वतंत्र करने के लिए जो जज्बा देखा, मैं

तो मोहित हो गई और वह मेरे अच्छे मित्र बन गए, उन्होंने ही फिर मुझे अपने स्वतंत्रता सेनानी साथियों से मिलवाया और देश के स्वाधीनता को लेकर मेरा मनोभाव देख उन्होंने मुझे अपने दल में शामिल कर लिया। पापाजी सिर्फ कुड़ी हूँ, इसलिए अपने चिंतन को दबा दूँ ऐसा मैं न सोच सकी। कुछ दिन तक तो मैंने छिपकर अंग्रेजों के विरोध में मोर्चे और रैली में भाग लिया पर फिर आपको मेरे इन कामों के बारे में पता लग गया और आपने किसी बड़े सरकारी अफसर से मेरी शादी तय करवा दी। आपने मुझे एक कमरे में बंद कर दिया था। मेरी शादी वाले दिन जब, बारात घर के दरवाजे पर थी, मैं खिड़की से भाग निकली। फिर मैंने और नरेंद्र ने शादी कर ली। लेकिन अपना बस एक ही लक्ष्य था, वो था स्वतंत्रता। उसके बाद मैंने सही मायने में संघर्ष को महसूस किया। हर रोज़ संघर्ष के नए- नए तरीके निकालते और उस पर अमल करते। रैली, मोर्चे, पैमफ्लेट बांटना ये सब तो रोज का था। इस तरह कई माह बीत गए। अचानक एक दिन हमें पार्टी की ओर से अपने शहर से आगे बढ़कर दूसरे शहरों में भी पार्टी के मुद्दों को पहुंचाने का काम सौंपा गया। यह काम हमें गुप्त रेडियो और अखबार के द्वारा करना था। बहुत मुश्किलों के बाद मेरे पति को एक प्रिंटिंग प्रेस में काम मिला। उद्देश्य यह था कि किसी तरह वो प्रिंटिंग के काम के बारे में जानकारी हासिल करेंगे और गुप्त रूप से अंग्रेज और भारतीय सरकार से छुपा कर अपना कार्य करेंगे। इसी तरीके के साथ हम काम करते रहे। सब ठीक ही चल रहा था और हम खुश भी थे कि हम अपने उद्देश्य में सफल हो रहे हैं और योजना के अनुसार काम हो रहा है। मगर हमारी खुशी ज्यादा दिनों तक टिकी नहीं शायद किसी खबरी ने हमारे गुप्त अड्डे का ठिकाना अंग्रेज तक पहुंचा दिया था। काफी रात हो चुकी थी, नरेंद्र अपने दूसरे स्वतंत्र सेनानी मित्रों के साथ प्रेस में काम कर रहा था। रात के एक बजे के बाद हम सब लोग एक छोटे से ढाबे में मिलते थे और आगे की योजना पर चर्चा कर लिया करते थे। पर उस रात के 1.30 बज गए ये पर फिर भी ना ही नरेंद्र आया और न ही पार्टी के अन्य साथी। दो दिन तक उनका कुछ पता नहीं चला। लेकिन योजनानुसार बाकी सदस्यों ने अपना काम जारी रखा। तीसरे दिन अज्ञात सूत्र से हमें पता चला कि नरेंद्र और बाकी के लोग गिरफ्तार कर लिए गए थे और इन्काउन्डर बताकर उन्हें मार दिया गया था। पापाजी, नरेंद्र मरा नहीं था वह शहीद हुआ था। नरेंद्र या उन जैसे लोग मरते नहीं वे लोगों के मन मस्तिस्क में देश प्रेम का अंकुर बो देते हैं।

पापाजी, आज रात फिरंगियों की एक बैठक है जहाँ बहुत सारे अंग्रेजी अफसर आएंगे। शाम को हमें वहाँ खुफिया तरह से जाकर उन सारे अफसरों पर आक्रमण करना है। हम सब मंत्र-मुग्ध हो जैसे उन पन्नों में खो गए थे। लेकिन मामाजी अचानक चुप हो गए। सबने एकसाथ पूछा फिर?

मामाजी ने कहा, " यहीं आखरी पन्ना है डायरी का"। कुछ देर सन्नाटा था।

पता नहीं उसके बाद क्या हुआ। पता नहीं वह डायरी कभी शांति जी के पापाजी को मिली थी भी या नहीं। पता नहीं उस डायरी को ट्रेन में किसने छोड़ा। कई सारे प्रश्नों ने हमें घेर

लिया था। आज सभी शांत भाव से बिना बात किए ही सो गए । सभी शायद अपने- अपने सोच से डायरी के असमाप्त पन्नों का अंत सोच रहे थे।

“स्वतंत्रता पर उन लोगों का निसंदेह आधिपत्य होता है जिनके अन्दर उसका बचाव करने का साहस होता है”- पेरिकल

श्रीजिता भादुरी (स्नातक द्वितीय वर्ष)

सुपुत्री: संयुक्ता भादुरी

(हिन्दी अधिकारी)



चित्रकार: अरिस्मिता दास (कक्षा-7) सुपुत्री: श्री अनूप दास (वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)



नियम तोड़ने का नतीजा

स्नेहा के गाँव का नाम पलाशपुर था। गाँव में उसके माता-पिता रहते थे। उसके पिता रोहित सिंह का वहाँ काफी बड़ा व्यापार था और वह शहर में अपने नाना - नानी के साथ रहती थी। वहाँ वह दसवी कक्षा में पढ़ती थी। सप्ताह के अन्त में वह अक्सर गाँव आती थी और रविवार के शाम को शहर वापस चली जाती थी। साधारणतः उसे घर का ड्राइवर मोहन शहर छोड़ आता था।

एक शाम यूँ हुआ कि किसी कारणवश मोहन काम पर नहीं आ पाया और उस पर स्नेहा का शहर जाना भी जरूरी था तो बाध्य होकर उसके पिता रोहित को उसे छोड़ने के लिए निकलना पड़ा। रास्ते में एक सिग्नल पड़ी पर चूँकि रास्ता खाली था तो स्नेहा के पिता ने निकल जाने की ठानी। स्नेहा ने काफी मना किया परंतु उन्होंने एक ना सुनी और स्पीड के साथ निकल पड़े। अचानक सामने से एक महिला आई और गाड़ी से टकरा गई। वह खून से लथपथ सड़क पर पड़ी थी। डर के मारे रोहित बिना रुके गाड़ी चलाकर निकल गया।

इस घटना के बाद काफी समय बीत चुका था। इस घटना का असर दिलो दिमाग से मिटने लगा था कि तभी एक बार फिर रोहित स्नेहा के साथ उसी सड़क से जा रहे थे। आज भी रास्ता एकदम खाली था। एकबार फिर रोहित ने सिग्नल को अनदेखा करने की ठानी। इस बार भी स्नेहा ने उसे सचेत किया पर रोहित अपने बेटे के बातों को अनसुना करते हुए आगे बढ़ गया। अचानक बीच सड़क पर एक महिला दिखी। आँखों के सामने पिछली घटना पिकचर की तरह घूम सा गया। मारे डर के स्नेहा ने आँखें बंद कर ली। रोहित थर-थर काँप रहा था। जोर के ब्रेक के साथ गाड़ी रुकी। सड़क बिल्कुल खाली था। कहीं भी किसी का नामोनिशान नहीं था। लेकिन गाड़ी का इंजन बंद पर चुका था। दोनों यूँ ही सड़क किनारे खड़े हो गए। फिर कुछ समय बाद दूर से एक पुलिस वैन आती दिखी। बीच सड़क पर खड़ी गाड़ी को देख पुलिस वाले ने गाड़ी रोकी और इस सुनसान सड़क पर ना रुककर उनके साथ जाने को कहा। गाड़ी को वहीं छोड़कर वैन में बैठकर वे अपने मंजिल की ओर बढ़ गए। पुलिसवालों से पता चला कि साल भर पहले इस सड़क पर एक महिला को किसी गाड़ी ने कुचल डाला था। गाड़ी का तो कुछ पता नहीं चला लेकिन तब से कोई भी गाड़ी इस सड़क पर सिग्नल तोड़ने की कोशिश करती है तो इंजन बंद पर जाती है। पुलिस वाला हँसते हुए

बोला, “इसलिए आजकल यहाँ ट्रैफिक पुलिस की आवश्यकता ही नहीं होती।” रोहित और स्नेहा दोनों चुप से बैठे रहे। रोहित अपने किए पर मन ही मन पछता रहा था और स्नेहा आज की इस आधुनिकता भरी जिंदगी में ऐसी घटना का कारण सोच रही थी। क्या यह सिर्फ वहम था या ऊपरवाले का कोई ईशारा। यही सब सोचते हुए न जाने कब आँखे लग गई। अचानक पुलिस वाले ने कहा “चलिए आपकी मंज़िल आ गई। भविष्य में कभी सिग्नल तोड़ने की कोशिश न कीजिएगा” कहकर वे निकल गए।

रोहित अपने करनी पर शर्मसार था और उसे इस पर आत्मग्लानि हो रही थी। उसने मन ही मन ठान लिया कि वह न तो खुद कभी स्पीड से गाड़ी चलाएगा और ना ही किसी को चलाने देगा।

अन्वेष्टा जाना (कक्षा-8)

सुपुत्री -सुब्रत जाना

(लेखापरीक्षक)



चित्रकार: अरिस्मिता दास (कक्षा-7) , सुपुत्री: श्री अनूप दास (वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)



अनमोल जीवन

सपनों की उड़ान भरकर, आसमान के पार जाओ,
हर सवाल का जवाब ढूँढने, अपने हृदय के भीतर जाओ।

खुद को पहचानो, राहों के पार जाओ,
हर पल जीवन के गहराइयों में झाँक कर, अपनी अनमोल धरोहर पाओ।

धूप-छाँव की सीख लो, जीवन की नई शुरुआत करो,
अपने सपनों को पंख दो, खुद को नयी ऊँचाइयों पर पहुँचाओ।

अपने अंतरद्वार खोलकर, बातें अपने दिल की सुनो,
कर संवाद अपने अंतरात्मा से, और खुद को पुरस्कृत करो।

जीवन को अनोखी मिसाल बनाओ, खुद के हर रंग दिखाओ,
ये जीवन है अनमोल, इसे हर पल सजाओ, हर पल मनमोहक बनाओ।

“जीवन के विजेता कुछ अलग नहीं करते परन्तु वह चीजों को अलग तरीके से करते हैं।”

-काशीनाथ

(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)



देवता का जन्म

इस शीर्षक की प्रेरणा मुझे बांगला के एक सुप्रसिद्ध लेखक स्वर्गीय शिवराम चक्रवर्ती के एक लेख से मिली है। चूँकि यह लेख किसी पत्थर का देवता के रूप में रूपान्तरण का नहीं है बल्कि इसका नायक एक सामान्य इंसान ही है। राजस्थान की मिट्टी में, इसके चट्टानों में और मरुस्थलीय रेत में जैसे इतिहास और लोकगाथा समाया हुआ है। आठवीं सदी के बाप्पा रावल से लेकर राणा कुम्भ, राणा सांगा, उदयादित्य, प्रतापादित्य, पृथ्वीराज-संयुक्ता, प्रताप का घोड़ा चेतक के गाथाओं को वास्तव और मिथक से अलग करना मुश्किल है। लेकिन आज से लगभग बत्तीस वर्ष पहले उपजे एक मिथक की कहानी आज मैं आपके समक्ष रखूँगा।

राजस्थान भ्रमण के इस पर्व में हमारे यात्रा का अगला पड़ाव था जोधपुर। हम माउंट आबू से जोधपुर जाने के लिए तैयार थे। माउंट आबू से जोधपुर की दूरी लगभग दो सौ सत्र किलोमीटर है। जाने में लगभग पांच घंटे का समय लगना था। जल्दी-जल्दी तैयार होकर लगभग सवा सात बजे हम जोधपुर के उद्देश्य से निकल पड़े।

राजस्थान भ्रमण के इस सम्पूर्ण सफ़र में हमारे कार चालक हिम्मत सिंह थे। वे एक बेहद खुशमिजाज इंसान थे, इन थोड़े दिनों में उनके साथ एक अपनापन सा हो गया था। भले ही हर दिन की तरह आज भी उन्होंने गुड मॉर्निंग कहा लेकिन आज वे कुछ बुझे-बुझे से लगे। रास्ते भर चलते-चलते हर दिन की तरह वे आज तरह- तरह की जानकारी ना देकर शांत भाव से गाड़ी चला रहे थे। फिर मैंने ही उनसे पूछा, “क्यों सिंह जी आज आपकी तबियत तो ठीक है ना?” उन्होंने बस हाँ में सर हिलाया और फिर शांत भाव से गाड़ी चलाने लगे। मैंने फिर पूछा, “आज आप बड़े उदास लग रहे हैं, घर में सब खैरियत है ना?” उन्होंने गाड़ी की स्पीड कुछ कम करते हुए अपना मोबाइल निकालकर एक तस्वीर दिखाया। तस्वीर दो युवक और एक युवती का था - टेबल पर रखा हुआ एक केक काट रहे थे। बातों-बातों में पता चला, आज उनके बड़े बेटे का जन्मदिन है। उनके दो बेटे और एक बेटी है। बड़ा बेटा जयपुर के किसी होटल में बाउंसर है, बेटी बी.एस.सी पास की है और छोटा अभी कॉलेज में पढ़ता है। बेटे को काम पर निकलना था और लौटते-लौटते देर हो जाएगी इसलिए सवेरे- सवेरे ही केक काटा गया। बच्चों ने कुछ समय पहले ही इस तस्वीर को भेजा था बस इसलिए पिता

का मन कुछ उदास हो गया था। हमने भी उनके बेटे को जन्मदिन की मुबारकबाद दी। बस उनका मन खुश हो गया, फिर यँही बातों-बातों में राह कटने लगी। लगभग डेढ़ घंटे का समय बीत चुका था, फिर अचानक उन्होंने कहा, सर, आज आप लोगो को बुलेट बाबा का दर्शन कराऊंगा। वो क्या है? - मैंने पूछा।

बात 1991 की है। राजस्थान के इस रास्ते से देर रात को जाते-जाते एक बाइक किसी तरह एक पेड़ से टकराई और पास के खाई में जा गिरी। बाइक चालक ओम सिंह राठौर का निधन हो गया। बाइक 350 सी.सी की रॉयल एनफील्ड बुलेट थी जिसकी रजिस्ट्रेशन संख्या RNJ 7773 थी। इसके बाद पुलिस बाइक द्वारा वह बाइक पुलिस स्टेशन लायी गई। लेकिन अगले दिन आश्चर्यजनक रूप से थाने से बाइक गायब हो गई। काफी तलाशी के बाद बाइक एक्सीडेंट स्पॉट पर मिली। पुलिसवाले फिर उस बाइक को थाने में लेकर आए। लेकिन अगले दिन फिर बाइक गायब थी। इस रहस्य का उद्घाटन करने के उद्देश्य से पुलिस ने बाइक के टैंक से पूरा पेट्रोल निकालकर उसे चेन से बाँध कर रख दिया। लेकिन अगले दिन भी अन्यथा न था। बाइक गायब और मिली दुर्घटना स्थल पर। बस फिर क्या था, इस अलौकिक घटना के बाद से स्थानीय लोगों को पूर्ण रूप से यकीन हो गया था कि बाइक में जरूर ओम सिंह आज भी ज़िन्दा है। बस फिर क्या था पाली-जोधपुर हाईवे पर पाली नामक एक स्थान में मृत ओम सिंह के नाम पर एक मंदिर का निर्माण किया गया जहाँ उस बाइक की पूजा की जाती है। मंदिर ओम बन्ना मंदिर या “बुलेट बाबा मंदिर” के नाम से जाना जाता है। हाईवे से जो भी यात्री आते-जाते हैं चाहे वे बाइक आरोही हो, ट्रक या गाड़ी लेकर यात्रा करते हों, इस मंदिर में रुककर पूजा देकर ही जाते हैं। लोगो का यह मानना है कि, बुलेट बाबा यात्रा के दौरान आने वाले विपत्ति से उनकी रक्षा करते हैं, ज्यादातर दुर्घटना शराब पीकर गाड़ी चलाने के कारण होती है, इसलिए प्रसादी के रूप में शराब का बोतल चढाया जाता है।

कहानी सुनते-सुनते चार घंटे का रास्ता आराम से कट गया था। लगभग ग्यारह बजे सिंह जी ने एक जगह आकर गाड़ी पार्क कर दी। आस-पास कुछ और गाड़ियाँ भी थी। इस मंदिर की निर्माण शैली सामान्य मंदिर जैसी नहीं थी। बांस का बना एक ढांचा था, जिसके पीछे एक वेदी पर एक एनफील्ड बाइक काँच से घिरा हुआ रखा था जिसके ऊपर एक मंडप सा बना हुआ था, मोटरबाइक को गेंदे के माला से सजाया गया था, सामने धूप और दीया जल रहा था। बाइक के सामने सैकड़ों लाल धागे बंधे हुए थे, शायद मन्नत के धागे हो सकते हैं। वेदी और उसके आस-पास का स्थान पत्थर का बना था। उसके दोनों तरफ दो आदमी ढोल और शंख बजा रहे थे। ड्राइवर सब आ-आकर एक-एक शराब की बोतल पुरोहित को पकड़ा रहे थे और दानपेटी में रुपये दे रहे थे। बोतल से एक ढक्कन शराब को लेकर फूल से पूजा कर उसे प्रसाद स्वरूप वापस दिया जा रहा था। भक्तो को तिलक भी लगाया जा रहा था। अत्यधिक भीड़ तो नहीं थी, फिर भी ड्राइवर समागम कम न था। यद्यपि हमने पूजा नहीं की थी, हिम्मत सिंह जी का हमें पता नहीं।

एक ढाबे में चारपाई पर बैठकर हमने चाय नास्ता लिया और पौने बारह के करीब रवाना हुए - जोधपुर की दूरी अब 50 की.मी. थी ।

(जोधपुर - अगला पर्व)

“ अगर आस्था है तो बंद द्वार में भी रास्ता है । ”

- राहुल बंद्योपाध्याय
(वरिष्ठ लेखापरीक्षक)



चित्रकार: अरिस्मिता दास (कक्षा-7) , सुपुत्री: श्री अनूप दास (वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)



संतुष्टि में सुख

शिखा मेरी प्रिय सहेली है। बचपन में ही उसकी माँ गुजर गई थी। उसके पिता ने उसे बड़े ही लाड़-प्यार से पाला। 18 साल की उम्र में उसके पिता का भी अचानक तीन दिन के ज्वर में देहांत हो गया था। मैं अक्सर उसे देखकर हैरान हो जाती क्योंकि वह हमेशा खुश रहती थी। परिस्थिति जैसी भी हो मैंने उसे कभी दुखी होते नहीं देखा, हर हाल में खुश। एक बार मैंने उससे पूछा कि हमारे जीवन में कोई भी छोटी-मोटी परेशानी आती है हम दुखी हो जाते हैं तूने तो जिंदगी में क्या-क्या नहीं झेला तब भी तू हमेशा खुश कैसे रह लेती है? उसने कहा, “मेरे बाबा की सीख जो हमेशा मेरे साथ रहती है, चल आज मैं तुझे अपने बचपन की एक कहानी बताती हूँ जिसने मेरे जीवन का रुख ही बदल दिया।

बचपन में अक्सर जब भी लोडसेडींग होती मेरी नींद उड़ जाती। मैं करवटे बदलती रहती। बाबा को जब भी मेरे परेशानी का एहसास होता वे पंखा झलने लगते। बड़े ही प्यार से कोई लोरी गुनगुनाते हुए सुलाने की कोशिश करते। पर मैं बाबा से अक्सर कहानी सुनाने की जिद करती। ऐसे ही एक रात जब लोडसेडींग चल रही थी, मैंने परेशान होकर कहा, “आप एक राजा क्यों नहीं हैं? अगर होते तो लोडसेडींग में परेशान होना नहीं पड़ता, अपनी गाड़ी होती, सब कुछ यूँ ही मिल जाता कितना अच्छा होता” बाबा ने कहा, मैं राजा ही तो हूँ और तू मेरी राजकुमारी। मेरा कन्धा तेरी गाड़ी और ये पंखा मैं तब तक चलाऊंगा जब तक मेरी राजकुमारी चाहेगी। फिर मैंने कहा तो तुम अपने राजकुमारी को एक कहानी सुनाओ। बाबा ने कहा, “आज मैं एक ऐसी कहानी सुनाऊंगा जिसे तू जिंदगी भर अपने साथ लेकर चलना” उस समय बाबा की बात मैं समझ नहीं पाई पर कहानी सुनने की खुशी में हामी भर दी।

जयचंद रतनगढ़ के जमींदार थे। वे अपने जमींदारी से सम्पूर्ण प्रजा को बहुत खुश रखते। किसी को भी उनसे कोई शिकायत नहीं थी। लेकिन वे निःसंतान थे इस बात का उन्हें बड़ा ही दुःख था।

प्रतिदिन जब सब सो जाते जयचंद छत पर जाते और चाँद और तारों से अपना दुःख बाँटते। जयचंद दिनभर अपने जमींदारी के कामों में व्यस्त रहते और रात को एकाकी छत पर टहलते। ऐसे ही एकदिन जब वे छत पर टहल रहे थे तो एक अजीब दृश्य देख स्तब्ध रह गए। उन्होंने देखा कि एक लंगड़ा आदमी रास्ते में कंबल बिछाए प्रफुल्लित मन से गीत

गा रहा है। आसपास ऐसा कोई नहीं जो उसका गीत सुन रहा हो। लेकिन वह निर्विकार मन से एक के बाद एक गीत गाते जा रहा था और ऐसे गाते-गाते वह सो गया। चाँद की रौशनी तले जयचंद को उस लंगड़े के चेहरे में छिपा सुकून दिख गया, जो जयचंद ने खूद कभी महसूस नहीं किया था। वह विस्मित था कि कैसे एक गरीब आदमी जिसके पास न तो घर है न ठिकाना, खाने को दो वक्त की रोटी नहीं उसपर दोनों पैर कटे हुए, कैसे इतना खुश रह सकता है? कैसे सुकून से सो सकता है? जयचंद ने सोचा, मेरे पास तो सुकून का सब कुछ है, पर नींद आंखों से कोसों दूर रहती है।

सुबह होते ही जयचंद सड़क किनारे लेटे हुए उस लंगड़े आदमी के पास पहुँचा। जमींदार बाबू को अपने सामने इस तरह खड़ा देख वह हड़बड़ा गया, जयचंद ने उसे निर्भय होने का आश्वासन दिया और उसे अपने महल में बुलाया।

जयचंद ने पूछा, तुम कौन हो?

- साहब, मैं भोला। ऐसे ही इधर-उधर पड़ा रहता हूँ।
- तुम करते क्या हो?
- ऐसा कोई भी काम जो बैठकर हो सके।
- अच्छा।
- क्या मैं तुमसे एक बात पूछ सकता हूँ?
- क्या महाशय?
- न तो तुम्हारे पास घर है और न ही धन उस पर तुम अपाहिज भी हो, तब भी तुम असीम शांति से गीत गाते हो, सुकून से सोते हो, कैसे? इसका राज बताओ।
- भोला ने हाथ जोड़कर कहा, साहब मैं जानता हूँ, मेरे दोनों पैर नहीं हैं। बचपन में नदी में नहाते हुए मगरमच्छ ने काट खाए थे। बाबा तो बचपन में ही गुजर गए थे और मेरे कष्ट को माँ सह नहीं पाई और गुजर गई। मेरा इस संसार में मेरे अलावा कोई नहीं है। मैंने अपने जीवन की हर एक घटना को जीवन का सच मानकर स्वीकार कर लिया है। मुझे न तो कुछ पाने की आशा है और न ही कुछ खोने का डर। मुझे लोग 'लंगड़ा भोला' कहकर पुकारते हैं, मुझे इसमें भी कोई एतराज नहीं। घर बार नहीं है जहाँ भी जगह मिले सो जाया करता हूँ। मेरा मानना है ऊपर आसमान रूपी छत है और नीचे धरती रूपी जमीन। इतना बड़ा घर तो नसीब वालों को ही मिलता है।

जयचंद हैरान होकर भोला को देखता रहा और मन ही मन सोचा, सच, यह तो मुझसे भी ज्यादा धनी है। उसके पास जो नहीं है उसका उसे अफसोस नहीं। वह हर हाल में संतुष्ट है। जयचंद ने भोला को भरपेट खाना खिलाया और खुशी-खुशी विदा किया।

आज जयचंद को एक सामान्य इंसान से जीवन की सबसे महत्वपूर्ण सीख मिली थी। उसे लगा कि भोला से धनवान इस पूरे संसार में कोई नहीं।

जयचंद ने सोचा मेरे पास तो मेरी प्रजा है, मैं सही मायने में उनकी देखभाल करूँगा। आज से वही मेरी संतान है।

तब तक मेरी आंखे भारी हो रही थी।

रतनगढ़, जयचंद, भोला सब जैसे मिलकर आंखों में समा रहे थे।

जब कभी भी मैं किसी भी बात से निराश होती तब बाबा हमेशा मुझे कहते जो है उसमें खुशी ढूँढ जो है, जो नहीं है उसका शोक करना वृथा है।

बाबा आज नहीं है किन्तु आज भी जैसे नए-नए रूप में लंगड़े भोला की कहानी सुनाकर मुझे राह दिखाते हैं। बाबा कहते थे, जो नहीं है समझो नहीं है, जो है तो है। अकेले होने का गम ना करो और किसी के साथ होने को लेकर अधिक प्रफुल्लित भी न हो। जीवन में सब क्षणिक है कुछ भी स्थाई नहीं।

- बस यही हैं मेरे खुश रहने का राज़।

इतना कहकर शिखा उठ खड़ी हुई, उसने कहा- “ मुझे एक जरूरी काम है, मैं चलती हूँ। मैं निष्पलक उसे जाते हुए देखती रही।

“समृद्ध वही है जो संतुष्ट है।”

प्रियंका शर्मा,
(कनिष्ठ अनुवादक)



जय सर की फटकार

पहली बार थामे माँ का हाथ, सहमी आँखों से चढ़ा था स्कूल बस,
नई ड्रेस, नए जूते, अनुशासन और होमवर्क, को लेकर साथ बीत गए यूँ ही
स्कूल जीवन के सुनहरे पल ।
आज स्कूल भवन है शांत, न तो बेल की चिंता है और
न ही किसी टीचर का डर, न है जय सर की फटकार ,
और न ही कोई सज़ा का डर, साथ है तो सिर्फ छोटी-छोटी यादें ।
स्कूल गेट के बाहर आँखें हैं नम ।
आज स्कूल गेट से काफी दूर निकल आया हूँ, असफलता तब भी थी, आज भी है ।
निराशा तब भी थी, आज भी है । लेकिन आज सब अलग सा है ।
आज “भरोसे” का दिलासा नहीं । आज “राह दिखाने” का वो मजबूत कन्धा नहीं ।
आज यह रंगीन शहर, नैतिकता को निगलने को तैयार है ।
तैयार है इंसानियत को अपने मुट्ठी में लेने को ।
और मैं खड़ा हूँ सीना ताने, सभ्यता की मसाल लिए ।
मेरे साथ है जय सर के वो अनमोल सीख - “संघर्ष कर कुछ पाने को विजय कहते हैं
झूठ पतन की निशानी है।”
“गुरु के पास ही वो जादुई कला हैं, जिससे मिट्टी भी सोने में बदल सकती हैं ”।

संवर्त चट्टोपाध्याय (स्नातक- चतुर्थ वर्ष):

सुपुत्र - संपद चट्टोपाध्याय

(वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)



नमक का महत्व

एक चुटकी नमक भोजन का स्वाद ही बदल देता है या फिर यह कह सकते हैं की अधिकांश खाद्य नमक के बिना स्वाद हीन हो जाता है। नमक न केवल भोजन में स्वाद की वृद्धि करता है बल्कि मीठे की तरह सभी प्राणियों के जीवित रहने के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत भी है। इसका रासायनिक नाम सोडियम क्लोराइड है। यह हमारे मस्तिष्क में अति सूक्ष्म विद्युत प्रक्रियाओं को संचालित करता है। यह हमारे शरीर में जल का संचय करती है और संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। विज्ञान कहता है कि इस पृथ्वी में जीव की उत्पत्ति नमकीन जल वाले महासागर से ही हुई थी। इसलिए इसे जीवन का आधार भी कहा जा सकता है। धरती में जो भी साग-सब्जियां हैं उनमें भी अल्प मात्रा में नमक रहता ही है। जो व्यक्ति नमक विहीन खाद्य लेता है उनके शरीर में नमक की आपूर्ति खाद्य पदार्थों से हो जाती है। नमक खाद्य में केवल स्वाद देने का साधन नहीं है वरन एक बेहतरीन कुदरती संरक्षक भी है। विश्वभर में लोग वर्षों से सब्जियों के साथ-साथ मांस-मछली को भी नमक के द्वारा संरक्षण करते हैं जिससे बेमौसम उसका आनंद उठा सके।

नमक कई प्रकार के होते हैं; जैसे - सेंधा नमक (पहाड़ी नमक), समुद्री नमक, काला नमक, सामान्य नमक आदि। नमक आमतौर पर सागर के जल के वाष्पीकरण से प्राप्त होता है और कहीं उसे चट्टान काटकर निकाला जाता है, परंतु वैज्ञानिकों के अनुसार वहाँ भी कभी समुद्र या खारे जल की झील या सागर के अवशेष रहे होंगे। भोजन हेतु प्रयोग में लाए जाने वाले नमक में प्रायः सोडियम होता है। सोडियम उच्च रक्तचाप को जन्म देता है और वहीं पोटैशियम उसे कम करता है। इसके अतिरिक्त नमक में और भी तत्व विद्यमान हैं। आजकल बाजार में कई तरह के नमक उपलब्ध हैं। लेकिन आमतौर पर लोग रिफाइंड आयोडाइड सफेद नमक क्रिस्टल और पाउडर रूप में सेंधा या काला नमक का ही प्रयोग करते हैं।

आयुर्वेद के अनुसार - रिफाइंड नमक में मेसोडियम एवं अन्य रसायन की अधिकता होती है जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती है। जबकि सेंधा नमक में कैल्शियम, आयरॉन, पोटैशियम, मैग्नेशियम, कॉपर जैसे खनिज तत्व पाए जाते हैं। इसलिए स्वास्थ्य की दृष्टि से इसे उत्तम माना जाता है। इसे हिमालयन नमक भी कहते हैं। यह कई रोगों के उपचार के लिए प्रयोग में लाया जाता है जैसे- ब्लडप्रेसर, त्वचारोग, वातरोग, डिप्रेशन, स्ट्रेस आदि। इस नमक के इस्तेमाल से मांसपेशियों का खिचाव व जकड़न भी कम होता है।

काला नमक लौह तत्व से भरपूर होता है। इससे एसिडिटी, पाचन समस्याएं, गैस, रक्त की कमी और कई बीमारियों से राहत मिलती है।

गर्मी के मौसम में जब पसीने के साथ शरीर से नमक बह निकलता है तो कई बार जीवन संकटमय हो जाता है। यही स्थिति डी-हाइड्रेशन के रोग में जलाभाव से उत्पन्न होती है। इसका उपचार सलाइन यानि नमक का घोल या नमक चीनी के घोल से तत्काल किया जाता है।

बड़े-बुजुर्ग के मुख से सुनी, नमक को लेकर एक प्रसिद्ध कहानी है- एक राजकुमारी से उसके पिता ने पूछा कि उसे सबसे प्यारा कौन है? अपनी पुत्री के मुख से पिता के मन में अपना नाम सुनने की इच्छा थी, लेकिन बिटिया ने जवाब दिया 'नमक'। पिता नाराज हो गए और अपनी बेटी को खुद से दूर भेज दिया। वर्षों बाद किसी बीमारी के कारण वैध ने राजा को नमक विहीन फीका खाना खाने को कहा, तब जाकर राजा को नमक के महत्व का एहसास हुआ।

नमक को लेकर लोकसंस्कृति से जुड़े मुहावरे भी प्रचलित हैं, जो नमक के साथ भोजन के संपर्क के साथ-साथ मानवीय संपर्क को भी दर्शाते हैं। जैसे नमक का कर्ज अदा करना, नमक-हलाली करना इत्यादि। नमक के साथ सौन्दर्य का भी अंतरंग संबंध है, 'सूरत का नमकीन होना', रूप लावण्य' इत्यादि नमक के साथ सौन्दर्य के संपर्क को दर्शाते हैं। किसी निराले व्यक्तित्व वाले शख्स के बारे में अक्सर यह कहा जाता है कि उनका स्वभाव बहुत ही नमकीन है अर्थात मन मोहित करने वाला।

ये तो रही नमक का खाद्य आदि में महत्व की बात। नमक का प्रयोग खाद्य के अतिरिक्त अन्य कई कार्यों में होता है। जैसे-स्वस्थ दांतों एवं मसूड़ों के लिए नमक का प्रयोग किया जाता है, इसमें पाए जाने वाले फ्लोराइड कंपाउंड दांतों को मजबूत बनाते हैं। इसमें कैरोस्टेटिक प्रभाव होता है, जो दांतों को कमजोर होकर टूटने से रोकता है। नमकपानी के गरारे करने से गले में खराश या सूजन से आराम मिलता है, सूजी आँखों के लिए नमक के पानी से आँखों का सेक आराम दिलाता है। इसके अतिरिक्त मच्छर आदि के काटने से होने वाली खुजली से नमक आराम देती है। बर्तनों को साफ करने के लिए नमक और विनेगर के घोल का प्रयोग किया जा सकता है, घर के साफ सफ़ाई के लिए भी नमक का प्रयोग किया जाता है।

अब तक तो हम नमक के फायदे पर चर्चा कर रहे थे, अब बताते हैं कि कैसे किसी भी वस्तु का मात्रातिरेक प्रयोग सेहत के लिए हानिकारक तो क्या जानलेवा भी हो सकता है। नमक की मात्रा अधिक होने पर वाटर रिटेन्सन की समस्या हो सकती है, क्योंकि किडनी अतिरिक्त नमक को फ़िल्टर नहीं कर पाता है और वह शरीर में जमा होने लगता है। इसलिए किडनी या लिवर की बीमारी में नमक का सेवन बंद या कम किया जाता है। इसके

अतिरिक्त अति मात्रा में नमक के सेवन से उच्च रक्तचाप, हृदय की समस्या आदि होती है।

उपरोक्त लेख से आपको ज्ञात हो गया होगा कि सेहत एवं स्वाद के लिए संतुलित मात्रा में नमक का प्रयोग फायदेमंद हो सकता है लेकिन अतिरिक्त मात्रा में नमक के प्रयोग से परहेज़ करें। स्वस्थ खाएं और स्वस्थ जिएं।

“नमक के बिना सिर्फ स्वाद ही नहीं जीवन भी नहीं ।”

श्रेयश भादुरी (कक्षा-11)

सुपुत्र: संयुक्ता भादुरी

(हिन्दी अधिकारी)



शाश्वत कर, कक्षा-3 सुपुत्र श्री सौमेन्द्र नाथ कर (वरिष्ठ लेखा परीक्षक)



अपनी तुलना दूसरों से न करें

एक समय की बात है, किसी जंगल में एक कौवा रहता था, वो बहुत ही खुश मिजाज़ था। वह अपनी जिंदगी से बहुत संतुष्ट था। उसकी इच्छाएँ बहुत सीमित थी। एक बार यँही जंगल में घूमते हुए उसने एक हंस को देखा। उसने सोचा अरे वाह, यह प्राणी तो बहुत सुन्दर है। ऐसा प्राणी तो मैंने पहले कभी नहीं देखा। इतना साफ़ और इतना सफेद, जरूर ही यह बहुत सुखी होगा। कौवा हंस के पास गया और पुछा, “भई तुम तो बहुत सुन्दर हो, शायद इसलिए तुम बहुत खुश रहते होगे ? इस पर हंस ने जवाब दिया, “हाँ, मैं तब तक बहुत खुश रहता था जब तक मैंने तोते को नहीं देखा था।” उसे देखने के बाद से लगता है कि वह इस धरती का सबसे सुन्दर प्राणी है।” “ देखो, हम दोनों के पुरे शरीर में एक ही रंग है पर तोते के शरीर का रंग हरा है ओर उसके गले में एक सुर्ख घेरा है। उसके होंठ भी लाल है।” “सच, वह बेहद सुन्दर है।”

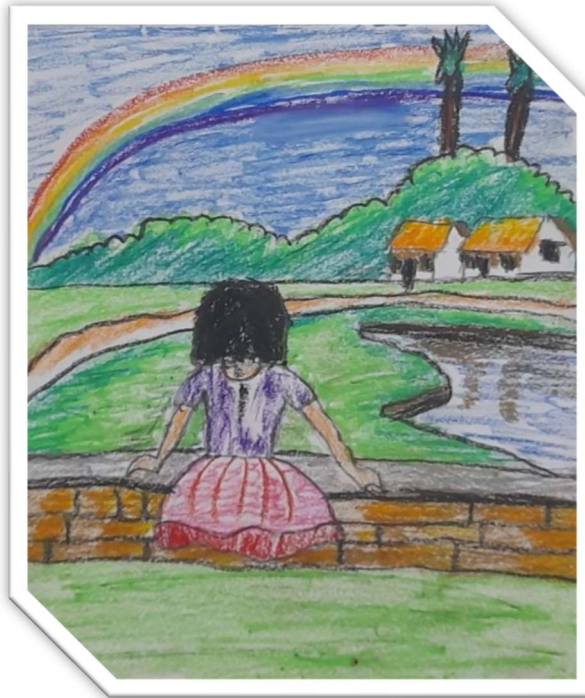
अब कौवा सोचने लगा कि इतना सुन्दर प्राणी (हंस) तोते को सबसे सुन्दर बोल रहा है, तो फिर मुझे उससे जरूर मिलना होगा और वह तोते की तलाश में निकल पड़ा। फिर हंस के वर्णानुसार, उसे एक चिड़िया दिखी और वह उसके खूबसूरती को देखकर हैरान हो गया। वह तुरंत उसके पास गया और उसका अभिवादन किया और कहा, “भई, तुम तो बड़े ही सुन्दर हो, तुम्हारा रंग बहुत ही निराला है, उस पर गर्दन का यह सुर्ख घेरा और लाल होंठ तुम्हारे खूबसूरती पर चार चाँद लगा रहे हैं, तुम अपने इस निराले रंग-रूप को पाकर ज़रूर बहुत खुश होगे?” तोते ने कहा, “हाँ भई, मैं तब तक बहुत खुश था जब तक मैंने मोर को नहीं देखा था।” कौवा ने पूछा, “क्यों?” तोता बोला- मेरे पास तो केवल दो ही रंग है और मोर तो जैसे सतरंगी है। अब कौवा मोर को देखने के लिए बेचैन हो गया। उसने पूरे जंगल में मोर की तलाश की। पर पूरे जंगल में एक भी मोर नहीं दिखा। मोर की तलाश करते-करते वह चिड़ियाघर पहुँच गया। मोर के अद्भुत खूबसूरती को देख वह दंग रह गया। उसने देखा कि कई सारे लोग भीड़ कर मोर को देख रहे हैं। कौवा सबके जाने का इंतज़ार करने लगा। सब लोगो के जाने के बाद कौवा ने मोर से पुछा, “अरे दोस्त, तुम तो दुनिया के सबसे सुन्दर जीव हो, तो शायद सबसे सुखी भी होगे ?” मोर ने दुखी मन से कहा, “कैसा सुख? देखो न लोग कैसे मुझे कैद करके रखते हैं। तुम अपनी मर्जी से कहीं भी आ-जा

सकते हो । तुम खुद अपने मालिक हो । इसलिए इस दुनिया में सबसे सुखी तुम हो ।” कौवा हैरान तो हुआ कि कैसे कोई दूसरा उसके जीवन की अहमियत समझ गया और वह पुनः अपने मन में संतुष्टि लिए उड़ चला ।

दोस्तों, ऐसा ही हम सब भी करते हैं, हम अपने खुशियों और गुणों को भूलकर दूसरों से उसकी तुलना करने लगते हैं । हमारे पास क्या है उसे भूल दूसरों को देख दुखी होते हैं । दूसरों की छोटी- छोटी खुशियाँ भी हमें बड़ी लगती है, और अपनी बड़ी से बड़ी खुशियाँ भी छोटी । अब से अपनी खुशियों को नज़र अंदाज़ न करके दूसरों की सुख में खुश होकर देखिये जिंदगी बहुत सुन्दर नज़र आएगी ।

“ सुख की तलाश दुःख के सबसे बड़े कारणों में से एक है ।”

श्री अमरेश
डाटा एंट्री ऑपरेटर



शाश्वत कर, कक्षा-3 सुपुत्र श्री सौमेन्द्र नाथ कर (वरिष्ठ लेखा परीक्षक)



वक्त कहाँ ?

सुख के साधन तो हैं बहुतेरे, पर खुश रहने का वक्त नहीं।
रात दिन के भाग दौड़ में, जिंदगी जीने का वक्त नहीं।

खेल खेलौने हैं बहुतेरे, बचपन बिताने का वक्त नहीं।
मन में दुलार और प्यार तो है सही, पर उसे जताने का वक्त नहीं।

रिश्ते-नाते हैं बहुतेरे, मिलने-मिलाने का वक्त नहीं।
रिश्तों का एहसास तो मन में है, पर निभाने का है वक्त नहीं।

मन में सपने हैं बहुतेरे, आँखों में नींद की कमी नहीं।
थकावट तो है मगर, सोने का है वक्त नहीं।

माता-पिता के लिए सम्मान तो है, प्यार और कर्तव्य का एहसास भी है ।
पर संतान को यह जताने का वक्त नहीं, उसे निभाने का वक्त नहीं।

दौलत के होड़ में सब दौड़ रहे, थककर भी रुकने का वक्त नहीं।
चाह और माँग के कश्मकश को, समझने का भी वक्त नहीं।

अब तू ही बता ऐ जिंदगी, ऐसे जीवन का क्या मोल,
जिसे हर पल जीने की चाह है, पर मायने समझने का वक्त नहीं।

“जो बीत गया उस समय के लिए मत रोइए, जो आया नहीं उस भविष्य की चिंता मत
करिए, जो वर्तमान में है उसे जी भरके जिएं और इसे सुंदर बनाएं।” - गौतम बुद्ध

श्रीमती संयुक्ता भादुरी
हिंदी अधिकारी



जीवन संघर्ष

क्या कहा तुमने, अब नहीं हो रहा ?
अच्छा? धैर्य है तुम्हारा खो रहा ?
अब संघर्ष करते-करते थक गए हो?
असफलताओं से पक गए हो?
चलने का अब मन करता नहीं?
कठिन राह देख रुक गए हो?

तुम चले ही क्यों जब हिम्मत न थी,
हालातों से लड़ने की ताकत न थी,
इतना ही था तो चलते ही ना,
रहते घर पे निकलते ही ना ।

जब निकले हो तो लड़ना होगा,
गिरते पड़ते पर बढ़ना होगा,
ठंडे पानी की इच्छा है,
तो कुएं तक तो चलना होगा ।

माना तपती दोपहरी है,
पर छाया की खोज तो करनी है ?
हो पथरीली ही राह मगर,
उस राह पर ही चलना होगा,
अगर निकले हो तो लड़ना होगा ।
गिरते पड़ते ही पर बढ़ना होगा ।

पुष्पों सी नर्माहट मिलती,
कहीं चाह तुम्हारी ये तो न थी?
है चाह जो दिनभर फूलों की,
तो कब्र में फिर जाना होगा ।
अगर निकले हो तो लड़ना होगा ।
गिरते पड़ते ही पर बढ़ना होगा ।

“जीवन में अपने लक्ष्य के लिए दृढ़ संकल्पित होना आवश्यक होता है, इसी से मानव सफलता पाता है।”

श्री अभिनव सक्सेना,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



सौभिक भट्टाचार्य(कक्षा-8) -सुपुत्र: इंद्रजीत भट्टाचार्य (सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)



माँ की ममता

माँ, यू तो माँ शब्द दिखने एवं बोलने में काफी छोटा सा प्रतीत होता है, परंतु इसके भाव एवं अर्थ बड़े गंभीर होते हैं। यह वह होती है जो मन की गहराई में अपनी एक अमिट छाप छोड़ती है। “माँ” दुनिया का सबसे प्यारा शब्द है। इसके उच्चारण मात्र से ही ममता, प्यार, आदर्श रूपी सागर की ऐसी असीम गहराई का एहसास होता है कि जिस गहराई को नापने के लिए और कोई शब्द और भाव की जरूरत नहीं पड़ती। माँ केवल एक शब्द ही नहीं एक ऐसी भावना होती है जो निःस्वार्थ बच्चों से प्रेम करती है। इस संघर्षमय जीवन में खुद को प्राथमिकता न देकर सर्वस्व लुटा देने वाली यह एक ऐसी जीवंत प्रतिमा एवं कला का उदाहरण होती है जिन्हें भगवान ने बनाया ही इसलिए है जो बच्चों के लिए अपना सब कुछ भूलकर लुटाने में ही जीवन का एकमात्र उद्देश्य समझती है। सही मायनों में, यह ईश्वर का स्वरूप होती है।

माँ एक ऐसी स्तंभ होती है, जो अपने बच्चों के भीतर शक्ति भरने में पूर्ण रूप से भूमिका निभाती है। इसकी जगह कोई ले ही नहीं सकता। आज की इस दौड़ती भागती जिंदगी में माँ ही होती है जो अपने बच्चों को सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से लायक बनाने में अपना अहम योगदान प्रदान करती है। सिर्फ सामाजिक, आर्थिक रूप से ही नहीं बल्कि अपने बच्चों के अंदर नैतिकता को कूट-कूट कर भरने में भी इनकी अविस्मरणीय भूमिका होती है। एक बच्चा को सींचने एवं सँवारने में इनका कोई मोल नहीं है। इनके न होने की कल्पना मात्र से रूह काँप जाती है। दरअसल, माँ की ममता का मोल हमें उनसे पूछना चाहिए जिनके पास इस अमूल्य रत्न का अभाव होता है।

माँ एक अमूल्य धरोहर होती है। यह वह नींव का पत्थर होती है जिसपर एक बच्चे का संपूर्ण भविष्य टिका होता है। एक बच्चे का पूरा विकास इन्हीं पर निर्भर होता है। यह एक ऐसी समझ होती है जो अपनी समझदारी से बच्चे को इस लायक बनाती है जिससे वह इस जीवन रूपी भवसागर को आसानी से पार कर सके। जीवन की हर एक प्रकार की भूमिका को यह बखूबी निभाती है। इसका पूरक समाज में और कोई भी नहीं हो सकता है।

इसका पूरक ढूँढ पाना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है। चाहे कोई कितना भी धनवान क्यों न हो इसकी शून्यता को कोई भी पूरा नहीं कर सकता है।

हमारा यह कर्तव्य होना चाहिए कि, हम इस ममता रूपी आँचल का सम्मान करें एवं इनके मुश्किल अवसरों पर इनका साथ निभाए। जीवन के हर एक उतार-चढ़ाव में जैसे यह अपना सबकुछ भूलकर, अपना सर्वस्व न्यौछावर कर हमें भविष्य के लिए एक कुँम्हार की भाँति गढ़ती है, उसी प्रकार जीवन के हर पड़ाव में जब इन्हें हमारी जरूरत पड़े, हमें इनका ताकत बनना चाहिए।

चलती फिरती हुई आँखों से अँजा देखी है,
मैंने जन्नत तो नहीं देखी है माँ देखी है-शेर मुन्नवर राना

सोमा चक्रवर्ती भादुड़ी
वरिष्ठ अनुवादक



किताब

किताबों की एक अलग ही दुनिया है,
हर किताब, एक अनोखा सफ़र,
हर पन्ना, एक द्वार,
किताबें जरूर पढ़िए।
पाठ्यक्रम की किताबें ही नहीं,
कुछ और भी पढ़िए।

महान लोगों की आत्मकथाएँ पढ़िए,
उनकी सीख जिंदगी में उतारिए,
सोच बदलेगा, नज़रिया बदलेगा,
जिंदगी बेहतर होगी।
इनके पूरे जिंदगी का ज्ञान,
बस कुछ ही पन्नों में मिलेगा।

या बस कहानी की किताबें ही पढ़िए,
पढ़ना बुरा नहीं है।
आध्यात्मिक किताब पढ़िए, उपन्यास पढ़िए,
यह एक अच्छी आदत है।
विज्ञान तो कहती ही आयी है,
बेहतर मानसिक स्वास्थ्य के लिए
किताब पढ़ना कितना जरूरी है।

बस दो पन्नें ही सही,
रोजाना किताब जरूर पढ़िए।
सोचने और समझने की शक्ति,
बढ़ती है, किताबों के ही जरिए।
किताबों से दोस्ती कीजिए,
यह दोस्ती होगी इतनी खास,
साथ निभाए जब तक हो आखरी सांस॥

“किताबें ज्ञान का भण्डार हैं, जो हमें जीवन जीने का तरीका सिखाती हैं।” -महात्मा गाँधी

रूपक भादुड़ी
पति - सोमा चक्रवर्ती भादुड़ी
वरिष्ठ अनुवादक



चलो कुछ यादें बनाएँ

चलो कुछ यादें बनाएँ
उस कटी पतंग के पीछे
अल्हड़ बच्चे जैसे भागें।

उस कीचड़ के तालाब में
अपनी कागज़ की कश्ती चलाएँ।

बारिश की बूँदें पकड़ें
इन्द्रधनुष का खज़ाना खोजें
किसी पेड़ से इमली, तो किसी से अमरुद तोड़ें।

जुगनुओं की लालटेन बना
झींगुर का गाना सुनें
तितली के पंखों-सी रंगीली माला बुनें।

बूढ़े बरगद को घर बना
झूले से आसमां तक उड़ चलें
आओ कुछ चने या भुट्टे भुनें।

कभी मन से या अनमने से
बेफ़िक्र हो यूँ ही खिलखिलाएँ
चलो कुछ यादें बनाएँ।

“जो तुम्हारी स्मृति में है, वहीं तुम्हारी रक्षा करता है।”- विलियम स्टैनले मर्विन

मो. फर्शाद राशिद, कक्षा - x

सुपुत्र, मो.फरुख राशिद, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



शाश्वत कर , कक्षा-3 सुपुत्र श्री सौमेन्द्र नाथ कर (वरिष्ठ लेखा परीक्षक)



जल और जीवन

जल जीवन है,
जल साधन है यह हम सब जानते हैं ।
अनमोल जल की महत्ता को,
यूँ तो हम सब मानते हैं ।

इसकी रक्षा कर्तव्य अपना,
मानकर भी क्यों हम मुकरते हैं ।
हर पल के इस जरूरत को,
महत्त्व क्यों नहीं देते हैं ?

नहाना, धोना, खाना पकाना और पीने के लिए आता काम,
फैक्ट्री और खेती बारी तमाम काम में इसका नाम ।
नाम तो इसका हम सब करते हैं, महत्त्व समझ नहीं पाते हैं,
धरती के इस अनमोल साधन को, यूँ ही व्यर्थ गँवाते हैं ।

भविष्य को संवारना हो तो,
इसका उचित प्रयोग करो ।
जल का बचाव करो
और हर प्राणी का बचाव करो ।

“जल है जीवन की धारा, हमें मिलकर इसे बचाना है

बिना जल धरती बेजान, यह बात सबको समझाना है ।”- विश्वजल दिवस

अरिस्मिता दास, कक्षा- VII

सुपुत्री, श्री अनूप दास, व.लेखापरीक्षा अधिकारी



बदल रहे हैं हमारे गाँव

आज के ज़माने और पहले के ज़माने के गाँव को देखा जाए तो दोनों में काफी अंतर नज़र आएगा। पहले के जमाने की बात की जाए तो तब हमें सिर्फ़ हरे-भरे खेत-खलिहान नज़र आते थे। उस समय खेती कोई मशीन और कृत्रिम खाद से नहीं की जाती थी। फलतः मिट्टी की सोंधी-सोंधी सुगंध कुछ अलग ही एहसास दिलाती थी। आसमान साफ़ रहता था और हमें कई टिमटिमाते सितारे दिखाई पड़ते थे। पहले के घर भी कच्चे हुआ करते थे। खाना भी मिट्टी के चूल्हे पर पकता था। बर्तन भी मिट्टी के ही होते थे तो उस खाने का स्वाद दो गुना हो जाता था। सड़क भी कच्ची थी और लोग साइकिल एवं बैलगाड़ी का इस्तेमाल करते थे। सभी लोग त्योहार मिलकर मनाते थे और एक-दूसरे के सुख-दुख में हमेशा शामिल हुआ करते थे। लोग कई किलोमीटर का फासला तय करके अस्पताल पहुँचते थे।

किन्तु आज के गाँव का दृश्य देखा जाए तो पहले से बहुत बदल गया है। आज भी गाँव में खेत है परंतु खेतों में वह सुगंध नहीं है। सारे घर भी अब पक्के बन गए हैं। अब तो खेती करने के नए-नए तरीके आ गए हैं, ट्रैक्टर आ गए हैं, कई तरह के बीज आ गए हैं। आजकल तो हमें वर्षा पर भी निर्भर नहीं रहना पड़ता है। विज्ञान की प्रगति से बहुत लाभ हुआ है। रास्तों पर भी अब बाइक, गाड़ी, ट्रक, आदि चलते नज़र आते हैं। नेटवर्क के कई टावर लग चुके हैं। अब लोगों को अस्पताल जाने के लिए कई किलोमीटर का फासला नहीं तय करना पड़ता है क्योंकि गाँव में अब एक नहीं, कई अस्पताल बन चुके हैं। कई दुकाने खुल गई हैं। पहले बिजली की भी समस्या थी, परंतु आज बिजली की समस्या काफी कम हो गई है। पहले पूरे गाँव में एक या दो विद्यालय हुआ करते थे, परंतु आज कई विद्यालय बन गए हैं और हर एक बच्चे को ज्ञान की प्राप्ति हो रही है। अब गाँव भी शहर से कम नहीं हैं। इस तरह आज के गाँवों में बहुत परिवर्तन आया है, प्रगति हुई है, लेकिन मिट्टी की वह सोंधी खुशबू और आपसी आत्मीयता की सुगंध शायद कहीं खो गई है।

“गाँव से सिखा है हमने सादगी का मतलब।”

मो. फर्शाद राशिद, कक्षा - x

सुपुत्र, मो.फर्रुख राशिद, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



जीवन सार

जीवन तो व्यर्थ मालूम पड़ता है,
किसी उद्देश्य के मिल जाने तक।

सुख का सागर पता न चलता,
दुखों का पहाड़ गुज़र जाने तक।

जीवन में मुकाम बड़े आसान हो गए,
जब बढ़ी उसकी प्यास मर मिट जाने तक।

दुआ को चाहिए इक उम्र असर होने के लिए,
हसरतें मांगती हैं दिल्लगी हकीकत होने तक।

सफलता के बाद वो मजा कहां,
जो था उसकी खोज में खोने तक।

जिंदगी बहुत खूबसूरत लग रही थी,
उस हादसे से गुजर जाने तक ।

संघर्ष भरा सफर सहना पड़ता है,
स्वभाव के अनुकूल सहज होने तक।

हृदय में प्रेम की कोई खबर न थी,
चुंबकीय खिचांव और रोम-रोम पुलकित होने तक।

उसे पाने की आरजू में अक्सर मैंने,
खुद को घटाया है, उसके बढ़ जाने तक।

ख्वाहीशों का सिलसिला यूं ही जारी रहेगा,
जिंदगी के मुकम्मल गुजर जाने तक।

“ज़्यादा ख्वाहीशें नहीं ऐ जिंदगी तुझसे, बस अगला कदम पिछले से बेहतरीन हो ।”

संजीव कुमार

सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी



मूक संगीतकार

आधुनिक शहर के भीड़-भाड़ वाली भारतीय सड़कों में, रोज़मर्रा के जीवन के कोलाहल में, आनंद नाम का एक किशोर रहता था। आनंद का जन्म परिवार में काफी खुशियाँ लेके आया, हर तरफ गीत-संगीत का माहौल था। आनंद की चंचल हँसी बहुत ही मनमोहक थी। सभी माता-पिता की तरह आनंद के माता-पिता भी अपने संतान के पहले शब्द बोलने का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे किन्तु भाग्य को यह स्वीकार न था। जब यह इंतज़ार लंबा होता गया तो आनंद का परिवार उसे शहर के बड़े डॉक्टर के पास ले गए। डॉक्टर ने जाँच करके यह बताया कि आनंद के स्वर कभी नहीं फूटेंगे क्योंकि आनंद के गले की स्वर रज्जु (Vocal Cord) अविकसित रह गई जिस कारण वह कभी बोल नहीं सकेगा, यह खबर आनंद के माता-पिता के लिए विचलित करने वाली थी। दोनों यह विश्वास ही नहीं कर पा रहे थे कि भगवान इतना निर्दयी भी हो सकता है। इन सभी बातों से अंजान आनंद का ध्यान बाहर हॉल में बज रहे रेडियो पर था, वो नन्हा सा बालक संगीत सुनकर मुस्करा रहा था।

आनंद के माता-पिता, हरि और लीला, आनंद का पूर्ण खयाल रखते ताकि आनंद को कभी यह न लगे कि उसमें कोई कमी है। उनके संघर्षों के बीच, वे अपने बेटे को प्यार और देखभाल से पालते थे। वे आनंद की संगीत में रुचि को छोटी उम्र से ही महसूस करते थे। जब कभी कोई संगीत की धुन हवा में भर जाती थी, तब आनंद की आँखें चमक उठती, उसकी उँगलियाँ अदृश्य ताल के साथ नृत्य करती थी।

जैसे-जैसे आनंद बड़ा होता गया, संगीत की दुनिया में और अधिक रमता गया। वह रेडियो पर घंटों गाने सुनने में लगाता, प्रत्येक स्वर और लय को जी जान से अपने में बसा लेता। उसकी संगीत के प्रति रुचि देख हरि ने उसे एक संगीतकार के पास भेजा। संगीतकार ने उसकी प्रतिभा को पहचाना। उसकी चुप्पी एक बाधा नहीं थी बल्कि एक कैनवास था जिसपर उसने अपनी जीवन की धुन बनाई।

प्रतिभावान होने के बावजूद, आनंद के लिए जीवन आसान नहीं था। उसे अपने साथियों था तिरस्कार और भेदभाव का सामना करना पड़ता था जो उसकी चुप्पी की दुनिया को समझ

नहीं पाते थे। तब भी, आनंद ने संगीत के प्रति अपना लगाव परिवार के अनंत समर्थन और गुरु की प्रेरणा के बल पर खुद पर अविरत विश्वास बनाए रखा।

एक दिन, किस्मत ने आनंद पर तब मेहरबान हो कर देखा जब एक प्रसिद्ध संगीत व्याख्याकार विक्रम ने आनंद की प्रतिभा को पहचाना। विक्रम आनंद की धुनों से प्रभावित हुए, जो वाक्पटुता की सीमाओं को पार कर उनके दिमाग से सहजता से बह रही थीं। उन्होंने आनंद को अपने संगीत मंडली में शामिल कर लिया, उनकी प्रतिभा को निखारा और उनके हुनर को पहचाना।

विक्रम के मार्गदर्शन में आनंद ने खूब तरक्की की। उनके विचारों ने उन्हें सबसे बड़ी मुसीबतों को चुनौती देने का साहस दिया और उनके अंदर ऐसी भावनाएँ जगाई जिन्हें शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। उनके दिल से निकला संगीत लोगों के दिलों को ऐसे छूता था जैसे वे कोई जादूगर हों।

आनंद की प्रसिद्धि तेजी से बढ़ी। उनकी रचनाएँ उम्मीद और प्रेरणा से भरी थीं, जो भारत और विदेशों में दर्शकों के दिलों में गूँजती थीं। तालियों और प्रशंसा के बीच आनंद ने अपनी नई ऊँचाइयों को तो याद किया लेकिन अपनी जड़ों या उन समस्याओं को कभी नहीं भुलाया जिन्होंने उन्हें आकार दिया।

अपने जीवन की शाम के दौरान आनंद ने कृतज्ञता और संतुष्टि के साथ अपनी पूरी यात्रा को देखा। उन्होंने चुपचाप अपने शब्दों को संगीत की भाषा में पिरोया था, एक ऐसी भाषा जो सभी बाधाओं को पार करने में सक्षम थी। आनंद जानते थे कि उनकी विरासत हमेशा जीवित रहेगी और उन्हें एक मूक-बधिर के रूप में नहीं बल्कि एक संगीतकार के रूप में जाना जाएगा।

“कला सत्य और सौंदर्य का साधन है।”

श्री शशिकांत पांडे
सहा.लेखापरीक्षा अधिकारी



शहीदों के नाम

अम्बर में कम्पन हुआ , धरती का संयम डोला था ,
अंतिम बार वह वीर सपूत , भारत माँ की जय बोला था ।
गिर पड़ा वीर पर हिम्मत थी, उठने की आस थी उसकी,
सो जाओ पुत्र काम खत्म हुआ, तब खुदा कान में बोला था ।
अम्बर में कम्पन हुआ , धरती का संयम डोला था ,
अंतिम बार वह वीर सपूत , भारत माँ की जय बोला था ।
माता के भी अशक थे बहे, उतारे श्रृंगार भी सोलह था,
न लौटेगा अब कभी वो, जो जल्दी आने को बोला था ।
रूह थी सब की तब काँप उठी, जब शव के मुँह को खोला था,
वो अस्त हुआ सूरज भी तब, यूँ चमक रहा तब शोला था ।
अम्बर में कम्पन हुआ, धरती का संयम डोला था,
अंतिम बार वह वीर सपूत, भारत माँ की जय बोला था ।

“जब देश में थी दिवाली, वो खेल रहे थे होली
जब हम बैठे थे घरों में, वो झेल रहे थे गोली ।“

श्री अभिनव सक्सेना
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

ऑडिट सप्ताह-2023 की कुछ झलकियाँ









कार्यालयीन शब्दावली

अंग्रेजी के कुछ ऐसे शब्द जिसमे कुछ जोड़कर या रूपांतरण कर हिंदी के शब्द भंडार को बढ़ाया गया है-

क्रम संख्या	अंग्रेजी	हिन्दी
1.	Non Practicing Allowance	प्रेक्टिस बंदी भत्ता
2.	Diarist	डायरीकार/ डायरीलेखक
3.	Electronics	इलेक्ट्रानिकी
4.	Pensioner	पेंशनभोगी
5.	Medical Report	डॉक्टरी रिपोर्ट
6.	Voltage	वोल्टता
7.	Hospital	अस्पताल
8.	To book	बुक करना
9.	Passenger Guide	यात्री गाइड
10.	Share capital	शेयर पूंजी
11.	Saving Bank	बचत बैंक
12.	Record Production	रिकॉर्ड उत्पादन
13.	Technician	तकनीशियन
14.	Issue voucher	निर्गम वाउचर
15.	Railway freight	रेलवे भाड़ा
16.	Bill counter	बिल पटल/ बिल काउन्टर
17.	Non pensionable	गैर- पेंशनी
18.	Simple debenture	साधारण डिबेंचर

[मुकुल पत्रिका-2024]

19.	Indent item	इंडेंट मद
20.	General budget	सामान्य बजट

कार्यालयीन प्रयोग के कुछ अंग्रेजी शब्द जिन्हें अपरिवर्तित रख कर हिंदी के शब्द भंडार को बढ़ाया गया है-

क्रम संख्या	शब्द
1. Guarantee	गारंटी
2. Grade	ग्रेड
3. Diary	डायरी
4. File	फाइल
5. Royalty	रॉयल्टी
6. Paperweight	पेपरवेट
7. Registry	रजिस्ट्री
8. Furniture	फर्निचर
9. Bill	बिल
10. Banner	बैनर
11. Book Post	बुक पोस्ट
12. Stock Register	स्टॉक रजिस्टर
13. Roster	रोस्टर
14. Parcel	पार्सल
15. Log Book	लॉगबुक
16. Budget	बजट
17. Platform	प्लेटफॉर्म

[मुकुल पत्रिका-2024]

18. Receiver	रिसीवर
19. Bureau	ब्यूरो
20. Bank	बैंक



